अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

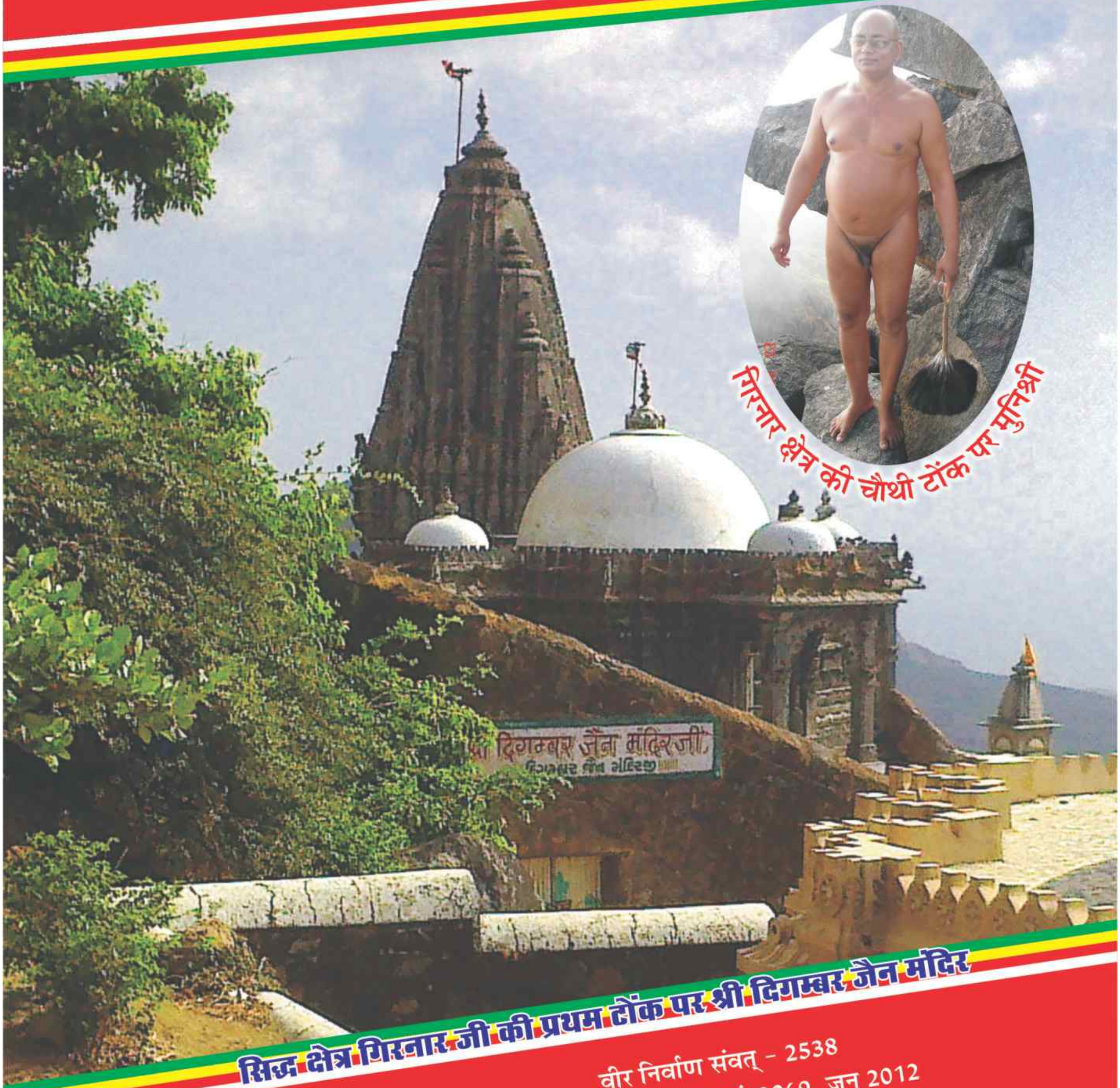

गिरनार क्षेत्र की चौथी टोंक पर मुनिश्री

सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी की प्रथम टोंक पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर

वीर निर्वाण संवत् - 2538

अषाढ़ शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2069, जून 2012

वर्ष : छह

अंक : बीस

मूल्य : 10/-

मूकमाटी

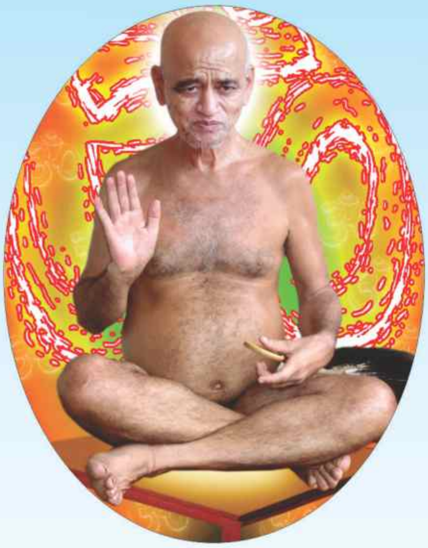

इस पर्याय की
इति कब होगी ?
इस काया की
च्युति कब होगी?
बता दो, माँ......... इसे!
इसका जीवन यह
उन्नत होगा, या नहीं
अनगित गुण पाकर
अवनत होगा या नहीं
कुछ उपाय करो माँ!
कुछ उपाय हरो माँ !
और सुनो,
विलम्ब मत करो
पद दो, पथ दो
पाथेय भी दो माँ!

फिर,
कुछ क्षणों के लिए
मौन छा जाता है-
दोनों अनिमेष
एक दूसरे को ताकती हैं
धरा की दृष्टि माटी में
माटी की दृष्टि धरा में
बहुत दूर.......भीतर........
जा......जा समती है
अब
धीरे-धीरे
मौन का भंग होता है
माँ की ओर से

क्रमश:........

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

2 जुलाई	-	चातुर्मास कलश स्थापना
3 जुलाई	:	अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
4 जुलाई	:	वीरशासन जयंती
6 जुलाई	:	रत्नावली, एकावली, द्विकावली
8 जुलाई	:	15, 22, 29 रविव्रत
15 जुलाई	:	रोहिणी
19-25 जुलाई	:	सप्तपरम स्थान व्रत
23 जुलाई	:	गरूण पंचमी
25 जुलाई	:	मोक्ष सप्तमी/भ. पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक
28 जुलाई	:	सौभाग्य/कलश/सुहाग दशमी
30 जुलाई	:	श्रवण दशमी
2 अगस्त	:	भ. श्रेयांसनाथ मोक्ष कल्याणक / रक्षा बंधन
5 अगस्त	:	12,19,26 रविव्रत
8 अगस्त	:	चंदन षष्ठी

12 अगस्त	:	रोहिणी
31 अगस्त	:	षोडशकारण व्रत
2 सितम्बर	:	9,16,23,30 रविव्रत
16 सितम्बर	:	लब्धि विधान / चारित्र शुद्धि व्रत
18 सितम्बर	:	त्रिलोक तीज (रोटी तीज)
19-28 सितम्बर	:	दशलक्षण व्रत
20-24 सितम्बर	:	पुष्पांजली व्रत / 20 सितम्बर-आकाश पंचमी
22 सितम्बर	:	शील सप्तमी
23 सितम्बर	:	निशल्य अष्टमी, भ. पुष्पदंत मोक्ष कल्याणक
24-28 सितम्बर	:	अनंत व्रत
25 सितम्बर	:	सुगंध दशमी
27-29 सितम्बर	:	रत्नत्रय व्रत
28 सितम्बर	:	अनंत चतुर्दशी / भ. वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक
30 सितम्बर	:	क्षमावाणी/षोडशकारण व मेघमाला व्रत पूर्ण

मुनिश्री की आर्जवसागर जी
बाल्यावस्था पारस चंद के रूप में

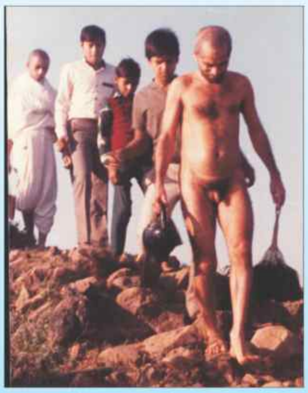

मुनिश्री ब्रह्मचारी अवस्था में
आचार्य श्री विद्यासागर जी के साथ

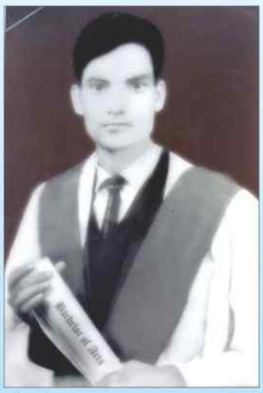

मुनिश्री के गृहस्थ अवस्था के पिता
स्व. श्री शिखरचंद जी जैन

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-छह
अंक - बीस

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक **पृष्ठ**

1. जय अहिंसा - जय गिरनार 2
''सम्पादकीय'' श्रीपाल जैन 'दिवा'
2. गिरनार स्तुति 4
मुनि आर्जवसागर
3. शताधिक गुरुगुण स्तवन 6
ब्र. व्रति बहिन पद्ममालिनी जैन
4. सम्यक् ध्यान शतक 7
मुनि आर्जवसागर
5. पारसचंद से बने आर्जवसागर 8
सह-संपादकीय
6. साम्य - भावना (सामायिक पाठ) 12
मुनि आर्जवसागर
7. जैन दर्शन में धर्म के लक्षण 14
डॉ. निर्मला जैन (बैनाड़ा)
8. गणितसार संग्रह 18
9. भगवान महावीर स्वामी का सन्मार्ग 20
संकलन : श्रीमती सुशीला पाटनी
10. ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति 21
डॉ. संजय कुमार जैन
11. प्रतिक्रमण 23
सह-संपादकीय
12. भगवान महावीर स्वामी जन्म जयन्ती व 25 वाँ मुनि दीक्षा रजत जयन्ती समारोह 25
13. जीवन 26
हनुमान सिंह गुर्जर
14. भाव विज्ञान परीक्षा बोर्ड, भोपाल 27
15. समाचार 28
16. प्रश्नोत्तरी 33

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

जय अहिंसा-जय गिरनार

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

अहिंसा के महान प्रवर्तक भगवान महावीर स्वामी विश्व विख्यात हैं। उन्होंने ''जीओ और जीने दो'' का संसार को संदेश दिया। जीवों की रक्षा के भाव एवं करुणा के सद्भाव का जन-जन के हृदय में बीजारोपण करने का महान कार्य किया। जैन धर्म की प्रभावना में चार-चाँद लगाये। फलस्वरूप भारतवर्ष के संविधान में भी अहिंसा की सुगन्ध बिखरी मिलती है। संविधान में लिखा है ''जैन धर्म आध्यात्मिक क्रांति की वह धारा है जो मनुष्य के चरित्र को परिष्कृत/उदात्त करने की दिशा में सक्रिय है। यह धारा अहिंसा पर जोर देती है और इसे उदात्त चारित्र की प्राप्ति का साधन मानती है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध राजनैतिक संघर्ष में अहिंसा; महात्मा गाँधी के हाथों में एक शक्तिशाली हथियार सिद्ध हुआ।''

अंहिसा के कंधों पर चढ़कर आई भारतवर्ष की स्वतंत्रता। जिसमें गरीबी हटाने, समता के स्थापन मद्यपान एवं नशीले पदार्थ के सेवन की कुटेवों को समाज से दूर करने की घोषणाएँ हुई। अशिक्षित और हिंसक जीवन शैली के स्थान पर सबको शिक्षा और अहिंसा पर आधारित जीवन शैली अपनाने की भावना की स्थापना का सद्प्रयास करने का उद्घोष हुआ।

इन घोषणाओं एवं उद्घोषों को कार्यान्वित करने का शासन-प्रशासन व समाज ने प्रयास भी किये। फिर भी विश्व के नागरिकों में हिंसक आहार शैली ने हिंसा को फलने-फूलने में सहयोग दिया। और भारत जैसे अहिंसक देश के भाल पर यांत्रिक कत्लखानों एवं मांस निर्यात का कलंक का टीका लगा दिया। जिस देश में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं उसकी पावन धरती की छाती पर रक्त के पनाले बहाये जा रहे हैं। यात्रिक कत्लखानों की स्थापना शासकीय योजनाओं की सुनियोजित पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत करोड़ों बेजुबान निरीह पशुओं की निर्मम हत्या कर विदेशी मुद्रा के लोभ में मांस निर्यात किया जा रहा है। भगवान महावीर स्वामी के समय में भी कदाचित् इतनी हिंसा धरती की पीठ पर नहीं थी। जो आज धरती की छाती पशुओं के रक्त से लाल रंगी जा रही है। सौभाग्य से वर्तमान में वर्तमान के महावीर विद्यासागर के रूप में अवतरित हो गये हैं। जिन्होंने जीवों की रक्षा का शंखनाद किया है। महावीर के जीओ और जीने दो के मंगल संदेश का डंका पीट दिया है। उनके तमाम शिष्य लघु विद्यासागर के रूप में शाकाहार की प्रभावना के माध्यम से अहिंसा की प्रभावना में चार चाँद लगा रहे हैं। वर्तमान में अन्य आचार्य उपाध्याय साधु विश्व मानवता को अहिंसा का पाठ पढ़ा रहे हैं। सभी साधुवाद के पात्र हैं। अनुकरणीय समादरणीय हैं। भगवान आदिनाथ ने तो आदिकाल में राजपाट का त्याग कर संयम धारण किया था। उन्होंने शाकाहारी अहिंसक जीवन शैली की स्थापना कर उस युग में करुणा की नदियाँ बहाईं थी। संयम धारण करने की मंगल परम्परा को जन्म दिया था। छः माह में प्रथम बार आहार को उठे थे। पड़गाहन विधि के ज्ञान के अभाव में पुनः वन लौट गये और पुनः छः माह बाद आहार को उठे। राजा

श्रेयांस को पूर्व जन्म की स्मृति में पड़गाहन का ज्ञान का स्मरण हुआ और उन्होंने मुनि आदिनाथ का विधिवत् पड़गाहन किया और इक्षुरस का आहर दान देकर प्रथम आहार दानी का श्रेय प्राप्त किया था। उन्होंने ही लोक में अन्न-धान्य रस आदि शाकाहारी खाद्य-पेय पदार्थों की उपज पैदा करने की शिक्षा दी थी। आहार के अभाव का सद्भाव किया था। प्रथम आहार का वह दिन था अक्षय तृतीया। आज भी अक्षय तृतीया इतना पवित्र दिवस माना जाता है कि किसी भी मंगल कार्य का सम्पादन अक्षय तृतीया को किया जा सकता है निर्विघ्न मंगल ही मंगल होगा। संयम की मंगल परम्परा में तेईस तीर्थंकर, करोड़ों मुनि आचार्य उपाध्याय साधु हुए जिन्होंने अहिंसा की महान प्रभावना करते हुए शाकाहारी जीवन शैली की मंगल शिक्षा-दीक्षा दी। भगवान नेमिनाथजी, जो कृष्णजी के चचेरे भ्राता थे-तो पशुओं के घात की बात सुनते ही वैराग्य भावना से ओत-प्रोत हो वन को लौट गये थे। राजुल टेर लगाती रह गई। पर रही नहीं, वे भी नेमीनाथ जी के संयम के मार्ग पर चल दीं। फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। ये थी भगवान आदिनाथ की संयम की मंगल परम्परा जोअद्यतन युग में भी चल रही है।

भगवान नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत को तपस्थली बना दिया। इस तपस्थली पर वर्तमान में संकट है उपसर्ग है। ऐसे समय में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री आर्जवसागर जी गिरनार पधारे हैं शासन-प्रशासन व गुजरात के मुख्यमंत्री जी को गम्भीरता पूर्व संकट का समाहार समय पर करना चाहिए। यह आवाज सकल विश्व जैन समाज की अहिंसक आवाज है इसको सुना जाना चाहिए और समीचीन समाधान कर स्थिति को सर्वधर्म समभाव से समय पर सम्भाल लेना चाहिए। यद्यपि जैन धर्म ऐसे अनेकों संकटों से गुजरा है। घोर अप्रभावनाओं ने विचलित करने का प्रयास किया है। परन्तु जैन धर्म की शिक्षा के अनुसार जैन समाज ने सदैव ऐसी अप्रभावनाओं के प्रसंगों में अहिंसक तरीकों से ही पार पाया है। इसी तरह अभी भी हम उसी मार्ग पर चलकर सफलता पायेंगे-सभी संयम धारियों के आशीर्वाद से।

जय गिरनार-जय अहिंसा

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	**अरविन्द जैन,** पथरिया	**इंजी. महेन्द्र जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन'**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161	दमोह		दमोह	9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

<u>**संरक्षक**</u> **:** श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, <u>**विशेष सदस्य**</u> **: दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी <u>**सदस्य**</u> **: जयपुर :** श्री शांतिलाल बागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

गिरनार-स्तुति

रचयिता-मुनिश्री आर्जवसागर जी

1. नेमिनाथ जी यदुवंशी नृप, कृष्ण भ्रात जयवन्त हुये।
भारत भू पर सत्य, अहिंसा, धर्म बढ़ा बलवन्त हुये।।
शौरीपुर से जूनागढ़ जब, व्याहन आये हुइ जयकार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

2. राजमहल से राजुल कहती, रथ में बैठे नेमिकुमार ।
विचार-मग्न वे दिखें सखी क्यों, उतरे रथ से नेमिकुमार ।।
पशुओं की पीड़ा को लखकर, सोचा दुखमय यह संसार।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

3. सहस्राम्र वन चले नेमि जब, देव पालकी भी लाये ।
वस्त्रादिक तज दीक्षा धारी, केशलोंच भी तब भाये ।।
प्रथम टोंक पर ध्यान लीन जब, राजुल नमति बारम्बार।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

4. प्रथमाहार हुआ जूनागढ़, स्वर्गिक पञ्चाश्चर्य हुए।
जय-जयकारों से गूँजा नभ, जन-जन के मुनिवर्य हुए ।।
दीक्षा वन में ध्यान व पाया, ज्ञान केवल समता धार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

5. देवेन्द्रों ने समवसरण जब, अतिशय पूर्ण रचाया था ।
वरदत्तादिक गणधरादि ने, तपधर ध्यान लगाया था।।
राजुल बनी आर्यिका माता, गणनी बन हि निज उद्धार।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

6. आर्यखण्ड में समवसरण से, धर्म ध्वजा लहराई थी।
टोंक पाँचवी से जिन नेमि-नाथ ने मुक्ति पाई थी ।।
असंख्य भव्यों का भी प्रभु से, हुआ आत्मिक निज उद्धार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

7. प्रद्युम्न कुमार ने भी मुक्ति, चतुर्थ टोंक से हि पायी ।
तृतीय टोंक से शम्बु जी ने, विमुक्ति पायी सुखदायी ।।
द्वितीय टोंक से मुनि अनुरुद्ध, मोक्ष गये कीना उद्धार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

8. पाँचों टोकों पर इन्द्रों ने, चरण बना तिनके पूजे ।
तथा बहत्तर कोड़ि सातसौ-मोक्ष गये मुनि सब पूजे ।।
ऊर्जयन्त, रैवतक कहो या, जग प्रसिद्ध पर्वत गिरनार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

9. धरसेनाचार्य पुष्पदन्त व, भूतबली को आगम दे।
उपकृत करते थे, फिर जिनने, रचे हि षट्खण्डागम ये ।।
चन्द्र गुफा युत गिरि को देखें, श्रद्धा को सब हिय में धार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

10. कुन्दकुन्दाचार्य से देखो, जैन धर्म की शान बढ़ी।
यहाँ दिखाया; प्रथम दिगम्बर-कहती देखो परी खड़ी ।।
अम्बर त्यागी बनें दिगम्बर, ऐसे मुनि पाते शिवगार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

11. गिरि-परिकर में वन की शोभा, वेल लताएँ हरष रहीं।
मेरु सदृश उन्नत गिरि है, भव लक्ष्मी जहँ वरष रही ।।
लुब्धमती हठ कर ना हटते, जैनी न मानेंगे हार ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

12. पर्वत ऊपर बने त्रि मंदिर, जैन दिगम्बर ध्वज फहरें।
तथा तलहटी में जिन मंदिर, जहाँ भविक, मुनिवर ठहरें।।
जूनागढ़ के जिन मंदिर में, धर्म 'आर्जव' बहे बहारे ।
नेमिनाथ की गौरव गाथा, गाता नित हि यह गिरनार ।।

दोहा

सिद्धक्षेत्र गिरनार के-निकट तलहटी जान ।
नेमिनाथ की शरण में, कविता रची महान ॥ 13 ॥

ऊर्जयन्त स्तोत्र को, गाते भवि जो आज ।
विघ्न टलें सब सुख मिलें, बने धर्म के काज ॥ 14 ॥

पुण्य कमा लें लोग ये, गाता है गिरनार ।
कर्मबंध से छूटकर, पहुँचें फिर भव पार ॥ 15 ॥

विद्यासागराचार्य की, कृपा; सु-यात्रा पूर्ण।
'आर्जव' बन नेमि बनूँ; मिले मोक्ष संपूर्ण ॥ 16 ॥

सिद्धक्षेत्र, गिरनार 27/04/2012

शताधिक गुरुगुण स्तवन

दीक्षा है पच्चीसवीं
रजत जयन्ती वर्ष।
आर्जवसागर मम गुरो
शतायु हों यह हर्ष ।।
शताधिक गुरुगुण स्तवन,
गाते भवि जो आज ।
पुण्य सम्पदा सुख मिले,
बिगड़े बनते काज ।।
मम आर्जव गुरु, मुनि यति महंत,
हो परमेष्ठी गुण गण लभंत।
हो उपाध्याय साधु प्रधान,
अतिथि अनगारी ऋषि महान।
योगी, ध्यानी, तपसी कहायँ,
हो दिग्अम्बर भिक्षु सुहायँ।
हो श्रमणसंत निर्ग्रन्थ आप,
संयमधारी निर् आरम्भ-पाप।
हो सरलस्वभावी सुशीलधारि,
परिषहविजयी उपकरण धारि।
हो महाव्रती यथाजातरूपि,
समकितधारी जिनसमस्वरूपि।
हो शिवसुखदायक नग्नधारि,
समता, करुणा, चारित्र धारि।
हो शुद्धोपयोगि सु-सौम्यमूर्ति,
वात्सल्य, अहिंसा, ज्ञान मूर्ति।
हो उत्तम पात्री गुरुमार्गी,
दुःखहर्ता भवतारक सुयोगि।
हो निःस्वार्थी धर्मानुरागी,
अपरिग्रही अक्ष विषय त्यागि।

हो महाकवि आशा विरक्त,
आगम पथिक अध्यात्म रक्त।
हो सुजन महात्मा क्षमामूर्ति,
सन्यासी, त्यागी, मोक्षमार्गी।
हो मंगलकारी पूज्यनीय,
महा-वैरागी संवेगनीय।
हो पाप भीरु एकाहार लेव,
जग हितकारी स्वाधीन देव।
हो सदुपदेशी सत्यभाषि,
सुप्रवचनकारी आत्मदर्शि।
हो धर्मप्रभावक शूरवीर
जगशोभित, मृदुभाषी गंभीर।
हो इन्द्रियविजयी पादयात्रि,
सुशिष्य तरुण दीक्षा सु-पात्रि।
हो अनियत भ्रमण परोपकारि,
जिनवाणी गायक धैर्यशालि।
हो सुगुण स्वामी प्रसन्नकारि,
गुण तेजस्वी सन्मार्गधारि।
हो मनोज्ञी, अनुपम कृतिकारि,
जग वन्दनीय सुसंस्कारि।
हो चलते फिरते तीर्थ आप,
ममता त्यागी दृढ़धर्मी आप।
हो आदर्शी आध्यात्म योगि,
क्षेमंकर साधु धर्म स्नेहि।
हो मन विजेता अनुभवि साधु,
सुग्रंथ रचयिता दयालु।
हो शिष्यों के पालक कहायँ,
श्रुतरत, समता आदिक बढ़ायँ।

हो सुख प्रदायक विनयवान,
जय केशलोंचधारी महान।
हो षोडशकारण दाता हि आप,
भव्यों के सु-कल्याण जाप ।
हो जगमग जगमग दीप समम्,
करुणा प्रधान दीक्षा वरम्।।
जय तत्त्व चितंक,
आत्म साधक, रत्नत्रय के आराधक।
जय जिनवर दर्शक लोक उद्धारक,
निजआराधक सुख दायक ।।

विद्यार्णव के शिष्य हो, आर्जव गुरो महान।
मम जीवन तुम-सा बने, शत-शत करूँ प्रणाम।।

ब्र. व्रति बहिन पद्ममालिनी जैन
तमिलनाडु

सम्यक् ध्यान शतक

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

अनन्त ज्ञान भण्डार मय, आतम गुण चिद्रूप।
कर्म मेघ हटते जहाँ, बने केवली रूप।।

रूपातीतध्यान

निष्कलंक त्रयकाल निज, शुद्ध निरंजन एक।
चिन्तन रूपातीत है, ध्यान करें मुनि नेक।।

❖

चिदानन्द मय पूर्ण यह, शुद्धातम गुण खान।
अमूर्त नित्य परमात्मा, ध्यावें सिद्ध समान।।

धर्म ध्यान के स्वामी

चौथे उस गुणथान से, सप्तम तक ये ध्यान।
ध्यान; विचय संस्थान यह, मुनिवर के पहिचान।।

शुक्ल ध्यान

पृथक्त्ववितर्कवीचार

अर्थ व्यंजन योग का, परिवर्तन जब होय।
श्रुत में ऊहापोह हो, शुक्ल ध्यान अथ होय।।

एकत्ववितर्क अविचार

एक योग में थिर रहे, श्रुत का मन्थन होय।
शुक्ल ध्यान फिर दूसरा, केवलज्ञानी होय।।

सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती

काययोग बस जब रहे, ना प्रतिपाती होय।
केवलज्ञानी आत्मा, परमातम सम जोय।।

व्युपरतक्रियानिवृत्ति

बने अयोगी आतमा, सर्व निवृत्ति होय।
सर्व कर्म बिनसें तभी, क्षण में मुक्ति होय।।

चौदहवें गुणस्थान का काल

गणधर के स्वर पंच लघु, उच्चारण में काल।
जितना, उतना है इसी, गुणस्थान का काल।।

क्रमशः ....

पारसचंद से बने आर्जवसागर

(बचपन से आज तक की जीवन गाथा)

- सह-संपादकीय

तीर्थंकरों की जन्मभूमि, धर्म का आधार, अहिंसा प्रधान इस भारतदेश में मध्यप्रदेश के दमोह जिले में फुटेराकलाँ एक सुन्दर ग्राम है। जो सुन्दर-सुन्दर फलादिक वृक्षों व धान्यों की हरियाली से परिपूर्ण दर्शित होता है। ग्राम के प्रमुख स्थान पर कुछ धनिक जैन परिवारों के बीच भगवान चन्द्रप्रभु का सुन्दर जिनालय है। ऐसे भव्य जिनालय के निर्माणकर्ता परवार समाज के श्रीमान कालूराम 'व्या' जैन के पूर्वज थे और जिनके सुन्दर नाम वाले पुत्र हुकुमचंद, भागचंद, कोमलचंद, शिखरचन्द, प्रकाशचन्द जैन थे। इन पुत्रों में से चौथे नम्बर के सुपुत्र श्री शिखरचन्द जी (हाईस्कूल के शिक्षक) के गृह में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मायाबाई की कूख से भाद्रपद शुक्लाष्टमी 11.9 सन् 1967 सितम्बर को प्रातः 4 बजे ब्राह्ममुहूर्त्त की प्रत्यूष वेला में फुटेराकलाँ की धरती पर एक सुन्दर चन्द्रमा-सम पुत्र का उदय हुआ। वास्तव में चन्द्रमा जैसा खूबसूरत ही तो था अतः ऐसा पुत्र माया माता को न मिले तो किसको मिले? क्योंकि माया माता ने जब शास्त्र के पट (चित्र) में भ. नेमिनाथ के भाई और यशोदा के दुलारे श्री कृष्ण को देखा तो गर्भ के समय ऐसा ही दोहला हुआ कि हमें भी श्रीकृष्ण जैसा सुन्दर खूबसूरत पुत्र होना चाहिए। तो ऐसा ही हुआ। पुत्र जन्मोत्सव में गृह-आंगन में मंगलवाद्य बज रहे थे, सौभाग्यवती महिलाएँ गीत गा रही थीं फिर भी माया-माता विचार मग्न थीं कि यह तो प्रायः सर्व गृहों में होता है लेकिन मेरे जैसे शुभ लक्षण वाला पुत्र सभी को नहीं मिल सकता। जो अज्ञानी रूपी लोहे को सोने जैसे कर देने वाले गुणों को भी लेकर आया था इसलिए तो माता-पिता ने उसका शुभ नाम 'पारसचन्द' जैन रखा। अथवा शिखरजी पर जैसे मोक्ष पाने पारसनाथ अवतरित हुए थे ऐसे ही शिखरचन्द जी के यहाँ मोक्षमार्ग का संस्कार पाने 'पारसचन्द' अवतरित हुए हों मानो और गृह में उसी राशी से 'पप्पू' कहकर भी लाड़-प्यार में पुकारते थे उसे। भगवान चन्द्रप्रभु का दर्शन करता हुआ पारसचन्द माता-पिता का प्रथम लाड़ला पुत्र परिवार के स्नेह से और अपनी शारीरिक सूर्य के समान कांति और सुन्दरता के कारण लोगों के हाथों हाथ जाता, सभी की गोद में सोता, फुटेरा की धूली में लोटता, गिरता। कभी सुन्दर झूले में झूलता तो माँ मायाबाई प्रभु के भजन सुनाती, स्तुति गाती और फिर कभी झूले में ही मचलता, रोता तो माँ लोरी भी सुनाती उसे; क्या सुनाती व क्या भावना भाती देखो-

तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
इस झूले में तू क्यों रोवे, कौन भई तकलीफ ॥ टेक ॥
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
आदिनाथ तीर्थंकर झूले, वर्धमान महावीर

इस झूले में झूल चुके हैं कैसे-कैसे वीर।
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
योनि लाख चौरासी झूलों तो न रोया वीर,
अबकी जतन करो तुम ऐसी, मिटे जगत की पीर।
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर,
माता तेरी समझावे सुन मन धर के धीर,
अब का यतन करो तुम ऐसा पियो न माँ का क्षीर।
इस झूले में तू क्यों रोवें, कौन भई तकलीफ,
तू तो सो जा बारे वीर, तू तो सो जा बारे वीर ।।

धन्य है ऐसी माया माँ जिनने कि कितने सुन्दर भाव संजोये पारस के लिए, वे सम्बोधन देती कि अब की ऐसी जतन (पुरुषार्थ) कर ले कि 'मिटे जगत की पीर' 'पियो न माँ का क्षीर' अर्थात् तुझे पुनः जन्म लेकर इस संसार में न आना पड़े और मोक्षमार्ग पर चलकर तू भगवान बन जा। देखिए बचपन में ही अपने लाड़ले पुत्र के लिए मुनि बनने का संस्कार दे रही हैं धन्य हैं ऐसी माँ जो 'मंदालसा' माँ जैसी अपने पुत्र को संस्कार दे रही हैं। तो चलिए आगे जब पारस थोड़ा चलने-फिरने लगा तो कभी तीर्थंकरों की कथा सुनाती तो कभी पहले वृषभनाथ जी बैल का चिन्ह, दूसरे अजितनाथ जी हाथी का चिन्ह इत्यादि चौबीस तीर्थंकरों के नाम और चिन्ह वे मायादेवी पारस को सिखाती और जब जिनालय ले जाती थीं तब- कहाँ निस्सही और कब अस्सही बोलना? कैसे बैठकर नमोस्तु करना? कैसे गंधोदक लेना ? कैसे द्रव्य प्रभु को अर्पित करना? ये सब सिखाती थीं अपने बेटे पारस के लिए। इतना ही नहीं जैसे-जैसे बड़ा होता चला वैसे-वैसे 'णमोकार मंत्र'; चत्तारी मंगल; आदि के साथ-साथ 'प्रभु पतित पावन मैं अपावन' आदि दर्शन स्तुतियाँ भी संस्कार दात्री माँ माया ने अपने लाड़ले पारस को सिखाईं। थोड़े दिनों के बाद फिर तो प्रातः होते ही स्वयं ही पारस डब्बी में चावल लेकर मंदिर जाने की रट लगाने लग गया। मन्दिर जाये बिना चैन कहाँ उसे, मानो मंदिर जाना शौक-सा बन गया था उसे, मन्दिर जाये बिना कुछ खाना-पीना पसंद नहीं करता था वह पारसचन्द, मतलब कि धार्मिक संस्कार का बीजारोपण उस पर हो ही गया था। फिर स्वयमेव पारस के मन में प्रश्न भी आने लगे कि प्रभु की तीन प्रतिक्षिणायें क्यों लगाना चाहिए माँ? तब माँ कहतीं कि रत्नत्रय पाने के लिए व तीन लोक के नाथ बनने के लिए तीन परिक्रमा लगाई जाती हैं बेटा। ऐसे ही प्रश्नों से ज्ञातव्य है कि बचपन से ही ऐसा होता है धर्म का संस्कार। पारस गेंदादि खिलोनों से भी खेलता हुआ अपने देवों जैसे मित्र सुरेन्द्र, वीरेन्द्र, राजेश आदि के साथ शुक्ल पक्ष की चन्दकलाओं सदृश बड़ा हो चला, कभी मित्रों के साथ नदी स्नान को जाता, कभी परिवार के आम्रवन (बगीचे) में जा मीठे-मीठे आम खाता तो कभी बटयागढ़ की बावड़ी देखने और बाजार घूमने चला जाता था सो ठीक ही है क्योंकि तीर्थंकर भी देवों के साथ ऐसी ही कुछ क्रीड़ायें करते-करते बड़े हो जाया करते थे।

पिताश्री शिखरचन्द जी को परिवार लेकर बी.एड. हेतु जबलपुर और सरकारी नौकरी के कारण कभी तारादेही, बाँसाकलाँ, पथरिया आदि स्थानों में रहना पड़ा। अन्त में पथरिया में ही धर्मायातन व शिक्षण आदि की सुविधा को देखकर फुटेराकलाँ में निजी गृह व जमीन होते हुए भी पथरिया में ही पारसचन्द के पिता श्री उन शिखरचन्द जी ने एक सुन्दर गृह निर्माण कर वहीं निवास ही बना लिया। क्योंकि जहाँ लोगों से घुल-मिल जाते हैं वहाँ बहुत दिनों के प्रवास से आत्मीयता स्वयमेव हो जाती है और वहीं लोग व्यवहारिकता से हंसी-खुशी रहने लग जाते हैं। लेकिन पारस का ननिहाल तो जबेरा में था। जहां पारसनाथ का मन्दिर था। पारसचन्द के नाना का नाम श्रीमान् कोमलचन्द सिंघई जैन था और नानी का नाम देशरानी सिंघई जैन था। पारसचन्द के शुभ नाम वाले सगे चार मामा थे नवीनकुमार, देवकुमार, मिट्ठूलाल और पवनकुमार जैन एवं एक अर्चना नामक मौसी भी थीं इन सब का स्नेह अपनी बड़ी बहिन मायाबाई पर खूब था। इसलिए जब भी ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन छुट्टियों का समय आता तो पारसचन्द के नाना और मामा लोग अपनी बहिन के परिवार को जबेरा ले आते थे और एक-एक, दो-दो महिनों तक पारसचन्द को अपने स्व परिवार से भी अधिक स्नेह देते थे। अपने मामा, नाना, नानी के परिवार के स्नेह से भी फलता-फूलता रहा वह पारस; व बबलू, लालू, मुकेश, अन्नू, लखन आदि मित्रों के साथ खेलते हुए कभी पिकनिक के लिए खेत-खलयान जाता कभी नदी-नहर पर जाता कभी आम्रवन में जाता तो कभी बंदरकोलाबांध (डेम) पर जाता इत्यादि रूप में मनोरंजन करता था। प्रातः नाना जी के साथ हाथ पकड़कर अभिषेक देखने व पूजन सीखने जिनालय भी जाया करता था मन्दिर से माथे पर चंदन भी लगाकर आता था। इस प्रकार धार्मिक संस्कारों से भी जीवन आगे जुड़ता ही गया सो ठीक ही है क्योंकि अच्छी होनहार वाले पुत्र खेल-खेल में ही बड़े होते हैं और धर्म भी सीख जाते हैं। वहाँ ही पारस का जीवन जिनमंदिर में चलने वाली धार्मिक पाठशाला से भी जुड़ा और जिससे तत्त्व ज्ञान से भी सुसंस्कारित होने लग यगा था। ऐसी जबेरा की धरती भी पारस के जीवन को मोक्षमार्ग के जीवन को उपयोगी बनी।

4-5 वर्ष की उम्र में जब जबेरा में धार्मिक पाठशाला में तीर्थंकरों व महापुरुषों के जीवन परिचय में रुचि लगी तभी उस छोटी-सी उम्र में जबेरा नगर में आयी नाटक मंडली के श्रीपाल जैसे नाम वाले व्यक्ति ने पारसचन्द का हाथ देखकर बताया था कि तुम साधु बनोगे, जो कथन पारस की स्मृति पटल पर अंकित हो गया था। 5-6 वर्ष की उम्र में माँ ने जब भक्तामर व छहढ़ाला पढ़ाया तथा तत्त्वार्थसूत्र आदि को सुनाया तब उन माँ से पारस ने पूछा कि आपको यह धर्म-पाठ किसने सिखाया था? तब उन्होंने कहा कि मुझे शादी के पहले जबेरा मंदिर में पधारे क्षु. चिदानंदसागर महाराजजी ने पढ़ाया था। वे बड़े प्रौढ़ व ज्ञानी थे। हमारी जैसी कई कन्यायें व महिलायें, पुरुष उनसे धार्मिक ग्रन्थ सीखते थे; और जब चौका लगाते थे तो आधा पोन कि.मी. दूर से कुएँ (झिरिया) का मीठा पानी सिर पर गागर रखकर लाते थे क्योंकि गाँव के भीतर का पानी थोड़ा खारा था।

6-7 वर्ष के उम्र में ही पारस ने अपने माता-पिता और नाना आदि ननिहाल परिजनों के साथ रेल तथा मोटर गाड़ियों द्वारा गिरनार, पालिताना, इन्दौर, बावनगजा, सिद्धवरकूट आदि क्षेत्रों की यात्रा की थी और गिरनार की ग्यारह हजार सीढ़ियाँ बिना किसी सहारे हँसी-खुशी में पैदल चढ़ ली थीं। इस यात्रा में पारस के स्मृति पटल पर जो कुछ अविस्मरणीय बातें बनी रहीं वे ये थीं कि पहाड़ पर पाँचवीं टोंक पर नेमिनाथ के चरण पूर्ण दर्शित होते थे। वहाँ पर कोई सरागी मूर्ति नहीं थी और न लालची पण्डों का प्रभाव था। रास्ते में पहाड़ पर यादव वंशी लोग मिट्टी के सकारों में दही बेचा करते थे। पारस के मन में भी लालसा जगी कि मैं भी श्रीकृष्ण के सदृश एक सकोरे में दही खाऊँ। पारस के माता-पिता ने दही खरीद भी दिया लेकिन पारस ने पूरा तो न खाया थोड़ा खाकर वही छोड़ दिया। पालिताना (शत्रुञ्जय) में पूर्ण वन्दना के उपरान्त एक भोजनालय में रसगुल्ले आदि के साथ रुचिकर भोजन भी किया था। सोनगढ़ में भगवान महावीर का 2500 वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में मेला देखा था व हेलिकॉफ्टर से पुष्पदृष्टि भी देखी थी। इसी तरह भावनगर में समुद्र के किनारे पारस ने एक बड़ा पानी का जहाज व किनारे पर नमक बनते हुए देखा था। इन्दौर में श्री हुकुमचन्द जी सेठ का काँच मन्दिर, इन्द्र भवनादि मंदिरों का दर्शन किया था। और इसी तरह विशाल बगीचे में पारस ने 15 पैसे टिकिट वाली बच्चों की रेल में भी सवारी की थी। बावनगजा (बड़वानी) के आदिनाथ भगवान के दर्शन करके ओंकारेश्वर से नाँव में बैठकर नदियों का संगम पारकर के सिद्धवरकूट की मंगलमय वन्दना भी की थी। ऐसे करीब दो महिने की सुखद यात्रा कर पथरिया वापिस लौटे थे। ये पावन स्मृतियाँ सिद्धक्षेत्र गिरनार की यात्रा को याद करने में यादगार-संस्मरण बन गयीं।

11-12 वर्ष की उम्र में पारसचन्द ने आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रथम दर्शन पथरिया नगर के बांझल सदन में किये थे। तब संघ में 4-5 के लगभग पिच्छि धारी थे और बीच के मंदिर के सामने रोड पर लगे स्टेज पर विराजित आचार्य संघ का दर्शन पूर्वक प्रवचन भी सुना था। 13-14 वर्ष की उम्र में पारस ने पुनः दमोह के नन्हें मन्दिर में विराजित आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ के दर्शन किये थे। तब संघ कुछ बड़ा देखने में आया था। कुछ मुनि और ऐलक भी थे। धर्म-चर्चा कर रहे थे और अपनी आवश्यक क्रियाओं में पिच्छिकाएँ घुमा रहे थे बड़ा वैराग्यवर्धक दृश्य लग रहा था। आचार्य श्री के दर्शन पारस ने माँ के साथ जब एक बड़ी खिड़की से भी किये और जोर से नमोस्तु किया तो तिरछी आखों से जो उनकी दृष्टि पड़ी थी वह भी हमेशा को यादगार बन गयी थी क्योंकि आचार्य श्री की श्रावकों को देखने में ज्यादा उत्सुकता नहीं थी। उसी दिन एक चौके में उनका आहार देखा था वे पीली-सी कोई वस्तु ले रहे थे। यह अवसर पारस के मन में मोक्षमार्ग की रुचि बढ़ाने वाला था। मुनिमार्ग में आने की उत्सुकता पैदा करने वाला था।

क्रमशः......

साम्य - भावना

(सामायिक पाठ)

रचयिता - मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

1. सब जीवों को हो क्षमा, क्षमा करें सब जीव ।
गुणियों के प्रति प्रेम हो, करुणा वहे सजीव ।।
2. दुर्जन में माध्यस्थ हो, भव से भय हि अतीव ।
जिनवर ऐसी भावना, भायें हम सब जीव ।।
3. अनन्त बल निज में कहा, प्रगट ध्यान से होय।
सुख-दुख में समता धरें, उत्तम सौख्य सुजोय।।
4. जिनवर पद मम हृदय में, बसें नित्य शुभ ध्यान ।
जीव बचा चर्या रहे, बचें सभी के प्राण ।।
5. शिव-मग के अनुकूल सब, चलें सभी हम लोग ।
स्वेच्छाचारी-पन तजें, ना हों दुर्गति, रोग ।।
6. जिनवाणी की हो विनय, करें भक्ति सम्मान ।
शुद्ध पाठ से शांत यह, मन बनता धीमान ।।
7. रत्नत्रय का लाभ हो, आत्म-लीन परिणाम ।
चिन्तामणि सम सौख्य दे, आगम तुम्हें प्रणाम ।।
8. पाप रहित परमात्मा, व्यसन काम से दूर ।
राग, द्वेष सब तज दिये, करें भक्ति भरपूर ।।
9. वीतराग जिन शरण में, सर्व कर्म कट जायँ ।
मोक्ष सुपद का लाभ हो, समता दल खिल जायँ ।।
10. बहिर् द्रव्य आसन तथा, पूजा वा सम्मान ।
आत्मलीनता में कभी, उपयोगी ना जान ।।
11. शरीर, भोग, परिजन सभी, मेरे ना, मम रूप ।
मैं न उनका कदापि हूँ, स्वस्थ रहा निजरूप ।।
12. ज्ञान शुद्ध दर्शन तथा, चरित रूप परिणाम ।
आत्म समाधि में सदा, ध्यावें साधु महान ।।

13. एकाकी निज आत्मा, शाश्वत निर्मल पूर्ण ।
पर पदार्थ जड़ रूप हैं, नश्वर भव सम्पूर्ण ।।
14. सामायिक में साम्य हो, संयम भावन रूप ।
आर्त्त-रौद्र न ध्यान हों, ध्यावें शुद्ध सुरूप ।।
15. संयोगज सब द्रव्य ये, वियोग सहहि अनित्य ।
चिन्ता, पीड़ा दें सदा, ध्यावें निज गुण सम्पूर्ण ।।
16. सांसारिक उलझन सदा, भव विकल्प से पूर्ण ।
पर चिंता को छोड़ दें, निज सुख है सम्पूर्ण ।।
17. स्वयं किये सब पाप वे, सुख-दुख दें यह ज्ञान ।
पर दें सुख-दुख जो कहें, रहे मूढ़ अन्जान ।।
18. चिंतन हो अध्यात्म का, बैर, अरति ना होय ।
किंचित भी न फल कभी - अन्य दे बुद्धि खोय ।।
19. परमातम की भक्ति से, पाप बंध कट जायँ ।
पुण्य बंध से सुख मिले, सुगति भव्य वे पायँ ।।
20. तप करते जब साधु वे, कर्म सभी गल जायँ ।
उत्तम फल वह मोक्ष सुख-मिलें सुगुण जग भायँ ।।
21. सम-दर्शन व ज्ञान व्रत, मोक्ष निमित्त महान ।
उपादान निज आत्मा, मग पुरुषार्थ प्रधान ।।
22. शिवमग की ये भावना, पढ़ें पद्य इक्कीस ।
'साम्य भावना' से लहें, अर्हद् पद इक ईश ।।

प्रशस्ति

23. ऊर्जयन्त में शुभ मना, शान्तिनाथ निर्वाण ।
पच्चिस सौ अढ़तीस है, वर्ष वीर निर्वाण ।।
24. शुभ तिथि, गुरु आशीष से, 'साम्य भावना' पूर्ण।
'आर्जव' बन शिव पद गहूँ, सुख पाऊँ संपूर्ण ।।

रचना – सिद्धक्षेत्र गिरनार जी
दिनांक 19.05.2012

जैन दर्शन में धर्म के लक्षण

- डॉ. निर्मला जैन (बैनाड़ा), उदयपुर

स्वभाव धर्म है। जीव का स्वभाव आनन्द है, ऐन्द्रिय सुख नहीं। अतीन्द्रिय आनन्द ही जीव का धर्म है। जिन कार्यों को करने से आनन्द प्राप्त होता है वह धर्म है। धर्म दो प्रकार का है एक बाह्य दूसरा अन्तरंग। पूजा, दान, शील, त्याग आदि करना बाह्य धर्म तथा साम्यता व वीतराग भाव की अधिकाधिक साधना करना अन्तरंग धर्म/निश्चय धर्म है। जो प्राणियों को संसार दुःख से उठाकर उत्तम सुख वीतरागता को धारण करता है वह धर्म है। वीतराग धर्म कर्मों का विनाशक है।[1]

तत्त्वार्थ सूत्र की प्राचीन टीका सर्वार्थसिद्धि में आचार्य पूज्यपाद ने **''इष्ट स्थाने धत्ते इति धर्मः''।**[2] जो इष्ट स्थान में धरता है वह धर्म है अर्थात् जो स्वर्ग/मोक्ष में धारण करता है। निज शुद्ध भाव ही धर्म है। यह संसारी जीवों की चतुर्गति दुःखों से रक्षा करता है।[3] **''मिथ्यात्वरागादि संसरण रूपेण भाव संसारे प्राणिनमुद्धृत्य निर्विकारशुद्धचैतन्ये धरतीति धर्मः।''**[4] मिथ्यात्व व रागादि में संसरण करने रूप भाव संसार से प्राणी को उठाकर जो निर्विकार शुद्ध चैतन्य में धारण कर दे, वह धर्म है वह धर्म स्वभाव से अपनी आत्मा में सुख अमृत रूपी शीतल जल से संसार दुःख का कारण काम क्रोधादि रूप अग्नि के लिए शान्त भाव है।

देशयामि समीचीनं, धर्मं कर्म निवर्हणं।
संसार दुःखतः सत्वान्, योधर त्युत्तमे सुखे।।

आचार्य समंतभद्र स्वामी कहते हैं कि मैं उस समीचीन धर्म को कहता हूँ जो कर्मों का नाश करने वाला है और जीवों को सांसारिक दुःखों से उठाकर स्वर्ग व मोक्ष सुख में रख देता है।[5]

अहिंसा आदि धर्म स्वरूप :

जैनागमों में सर्वत्र अहिंसा को महत्त्व दिया, वह अहिंसा को परम धर्म भी कहा गया। **''अयं जिनोपदिष्टो धर्माऽहिंसा लक्षणः सत्याधिष्ठितो विनयमूलः। क्षमाबलो ब्रह्मचर्य गुप्त उपशमप्रधानी नियति लक्षणो निष्परिग्रहतालम्बनः।''**

अर्थात् जिनेन्द्र देव ने जो यह अहिंसा लक्षण धर्म कहा है, सत्य उसका आधार है, विनय उसकी जड़ है, क्षमा उसका बल है, ब्रह्मचर्य से रक्षित है, उपशम उसकी प्रधानता है, नियति उसका लक्षण है, निष्परिग्रहता उसका अवलम्बन है।[6] धर्म दया से विशुद्ध/निर्मल होता है। वह धर्म है जहाँ दया है। दया में

अहिंसा, करुणा, मैत्री आदि का भी समावेश हो जाता है। ''**सोधम्मो जत्थ दया**'' तथा ''**धम्मो दया विशुद्धो**''[7] ''**जीवाणं रक्खणो धम्मो**'' जीवों की रक्षा करना धर्म है। स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा में कहा है-

धम्मो वत्थुसहावो खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
रणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणो धम्मो ।।[8]

वस्तु का स्वभाव धर्म हैं। दस प्रकार - क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य आदि भाव धर्म है। रत्नत्रय को धर्म कहते हैं और जीवों की रक्षा करने को धर्म कहते हैं। यहां पर आचार्य ने धर्म के विविध स्वरूपों को बतलाया है। जीव आदि पदार्थों के स्वरूप का नाम धर्म है। जैसे शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूप है, यही चैतन्य उसका धर्म है। अग्नि का स्वभाव उष्णता है और जल का स्वभाव शीतलता है। यही उसका धर्म हैं तथा उत्तम क्षमादि रूप आत्मपरिणाम भी धर्म है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूप तीनों रत्न भी धर्म हैं। इस प्रकार प्राणियों की रक्षा करना धर्म है।

सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वराः विदुः।[9] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र धर्म है ऐसा भी कहा गया।

व्यवहार धर्म और निश्चय धर्म स्वरूप

व्यवहार धर्म :- ''**पंचपरमेष्ठयादि भक्ति परिणामरूपो व्यवहार-धर्मस्तवदुच्यते।**'' पंच परमेष्ठी आदि की भक्ति के परिणाम से व्यवहार धर्म होता है। जिसे पुण्य भी कहा गया।

''**धर्मशब्देनात्र पुण्यं कथ्यते।**''[10]

''**गृहस्थानामाहारदानादिकमेव परमो धर्मस्तेनैव सम्यक्त्वपूर्वेण परंपरया मोक्षं लभन्ते।**''[11] आहार दान आदि चतुर्विध दान गृहस्थों का परम धर्म है सम्यक्त्व धर्म से परम्परागत मोक्ष की प्राप्ति होती है। ''**व्यवहार धर्मे च पुनः षडावश्यकादि लक्षणे गृहस्थापेक्षया दानपूजादि लक्षणे वा शुभोपयोग स्वरूपे रति कुरू।**''[12] साधुओं की दृष्टि से भी षडावश्यक धर्म है तथा गृहस्थों की दृष्टि से दान, पूजादि शुभ उपयोग व्यवहार धर्म है।

निश्चय धर्म स्वरूप :-

आत्मधर्म विशुद्धधर्म है, यह विशुद्धता भी उत्तम परिणामों से आती है। जिसके विषय सभी आचार्यों ने स्पष्ट कथन किया है कि आत्म परिणाम से समभाव उत्पन्न होता है यही अतिशयता को प्राप्त कराता है।

''**चारित्तं खलु धम्मो जो सो समो त्ति णिद्दिट्ठो।**
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हि समो।''[13]

अपने स्वरूप का आचरण चारित्र है। वह धर्म वस्तु का स्वभाव है। जो समभाव है वह मोह(दर्शन मोह) और क्षोभ (चारित्रमोह)से रहित आत्मा का परिणाम है। वीतराग चारित्र, निश्चय चारित्र, धर्म, सम परिणाम, आत्मा का परिणाम एकार्थ वाचक है।

मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो धम्मो।[14]

अर्थात् मोह व क्षोभ रहित (दर्शन मोह व चारित्रमोह या राग, द्वेष व योगों से रहित) आत्मा के परिणाम धर्म हैं। वस्तुस्वरूप की अपेक्षा रागादि ही हिंसा, अधर्म व अव्रत है और उनका त्याग ही अहिंसा धर्म व व्रत है। रागादि समस्त दोषों से रहित होकर आत्मा का आत्मा में ही रत होना धर्म है।[15] प्रवचनसार / तत्त्वार्थ दीपिका में स्पष्ट किया है–

''वस्तु स्वभावत्वाद्धर्मः। शुद्ध चैतन्यप्रकाशनमित्यर्थः।....... ततोऽयमात्मा धर्मेण परिणतो धर्म एवं भवति।''[16]

अर्थात् वस्तु का स्वभाव धर्म है। इसका अर्थ है – शुद्ध चैतन्य का प्रकाश करना। इसलिए धर्म से परिणत आत्मा ही धर्म है।

''रागादिदोषों से रहित तथा शुद्धात्मा की अनुभूति सहित निश्चय धर्म होता है।''[17]

धर्म भेद – प्रभेद :-

''उत्तम खममद्दवज्जवसच्चसउच्चं च संजमं चेव। तवचागमकिंचणहं बम्हा इदि दसविहं होदि।''[18]

अर्थात् उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य ये दस धर्म के भेद हैं।

''सम्पूर्णदेशभेदाभ्यां स च धर्मो द्विधा भवेत्।''[19]

सम्पूर्ण और एक देश से धर्म के दो प्रकार हैं। मुनि व गृहस्थ धर्म या अनगार व सागार धर्म भी इसी प्रकार के हैं। दया धर्म गृहस्थ और मुनि दोनों ही पालन करते हैं। वही धर्म सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप उत्कृष्ट रत्नत्रय कहलाने लगता है तथा उत्तम क्षमादि के भेद से दस प्रकार का हो जाता है।[20]

जीव के शुभ, अशुभ तथा शुद्ध भाव

जो वस्तु जिस समय, जिस रूप परिणमित होती है, वह उस रूप से कही जाती है। कर्म रहित शुद्ध

अवस्था स्वभाव रूप है कर्म सहित होकर यह विभाव रूप परिणमन करती है। जिसके विषय में कहा है:-

जीवो परिणमदि जदा सुहेण असुहेण व सुहो असुहो।
सुद्धेण लहदि सुद्धो हवदि हि परिणाम सब्भावो ।।[21]

जब यह जीव शुभ अथवा अशुभ परिणामों को करके परिणमता है तब वह शुभ व अशुभ होता है। अर्थात् जब यह दान, पूजा व्रतादिरूप शुभ परिणामों से परिणमता है तब शुभ धर्म होता है, और जब विषय, कषाय, अव्रतादिरूप अशुभ भावों को कर परिणत होता है तब अशुभ रूप होता है। जब यह जीव आत्मिक वीतराग शुद्ध भाव स्वरूप परिणमता है तब शुद्ध रूप होता है। जब जीव शुभ धर्म करता है तो स्वर्ग सुख को प्राप्त करता है और जब यह जीव वीतराग आत्मिक धर्म अर्थात् निर्ग्रन्थ बन शुद्ध धर्म करता है तो मोक्ष प्राप्त करता है। यही जीव जब विषय कषायादि अशुभ कर्म करता है तो संसार परिभ्रमण करता है।

धर्म शब्द निश्चय से जीव का शुभ परिणाम है। उसमें ही नय विभाग रूप से वीतराग सर्वज्ञ प्रणीत सर्वधर्म अन्तर्भूत हो जाते हैं। जब जीव के शुद्ध भाव होते हैं यह शुद्ध कहलाने लगता है। उत्तम क्षमादि धर्म भी जीव के शुद्ध भाव हैं। रत्नत्रय धर्म भी शुद्ध हैं राग द्वेष मोह के अभाव रूप लक्षण वाला धर्म भी जीव का शुद्ध स्वभाव है। वस्तु स्वभाव तो परम शुद्ध धर्म है।[22]

इस प्रकार विविध आगमिक चिन्तन से स्पष्ट है कि धर्म आत्मा का स्वभाव है, जो सदैव बना रहता है, किन्तु अपने अपने जीव के परिणाम से यह विविध रूप को प्राप्त होता है।

संदर्भ :-

1. रत्नकरण्डक श्रावकाचार 12
2. सर्वार्थसिद्धि 9/2/789
3. परमात्म प्रकाश 2/68 (महापुराण 47/382), (चारित्रसागर 3/1)
4. प्रवचनसार/तात्पर्यवृत्ति 7/9/9
5. रत्नकरण्डक श्रावकाचार 2
6. बोध पाहुड़ 25 (नियमसार/तात्पर्यवृत्ति 6 में उद्धृत) (दर्शन पाहुड़ टीका 2/2/20)
7. सर्वार्थसिद्धि 9/7/8/0/2
8. कार्तिकेयानुप्रेक्षा 478 (दर्शन पाहुड/टीका 9/8)
9. रत्नकरण्डक श्रावकाचार 3
10. परमात्मप्रकाश - 2/3/116/10
11. परमात्मप्रकाश/टीका 2/11-4/213/14
12. परमात्मप्रकाश/टीका 2/134/251/2
13. प्रवचनसार 7
14. भावपाहुड़ 83 (परमात्मप्रकाश 2/68)
15. भावपाहुड़ 85
16. प्रवचनसार/तत्त्वप्रदीपिका 7, 8
17. पंचास्तिकाय/तात्पर्यवृत्ति 85/143
18. बारस अणुपेक्खा/70, (तत्त्वार्थसूत्र 9/6), भगवती आराधना/वि. 46/154/10
19. पद्मनन्दि पंचविंशतिका 6/4 (बारस अणुपेक्खा/68), (कार्तिकेयानुप्रेक्षा/304), (चारित्रसार 3/1)
20. पंचविंशतिका 1/7 (द्रव्य संग्रह टीका 35/145/3)
21. प्रवचनसार 9
22. परमात्म प्रकाश/टीका 2/68/190/8

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

एकादिचयेष्टपदे पूर्वं राशिं परेण संगुणयेत् । गुणितसमासस्त्रिगुणश्चरमेण युतो घनो भवति ॥४५॥
अन्त्यान्यस्थानकृतिः परस्परस्थानसंगुणा त्रिहता । पुनरेवं[2] तद्योगः[3] सर्वपदघनान्वितो वृन्दम् ॥४६॥
अन्त्यस्य घनः कृतिरपि सा त्रिहतोत्सार्य शेषगुणिता वा ।
शेषकृतिस्त्र्यन्त्यहता स्थाप्योत्सार्यैवमत्र विधिः ॥४७॥

१ P में यह श्लोक प्राप्य नहीं है । २ M°रपि । ३ M°गो वा । ४ यह श्लोक M में छूट गया है । P K B में निम्नलिखित श्लोक पाठान्तर रूप में प्राप्य है । उपर्युक्त दो विधियों का उल्लेख इसमें भी है ।

त्रिसमगुणोऽन्त्यस्य घनस्तद्वर्गस्त्रिगुणितो हतः शेषैः ।
उत्सार्य शेषकृतिरथ निष्ठा त्रिगुणा घनस्तथाग्रे वा ॥

समान्तर रूप से बढ़ती हुई श्रेढि में (जिसका प्रथम पद एक है तथा प्रचय भी एक है और पदों की संख्या कोई दी गई राशि के बराबर है), प्रत्येक पिछले पद को अगले पद से गुणा कर प्राप्त गुणनफलों का योग प्राप्त कर प्राप्त योगफल को तीन से गुणित करते हैं । इस प्रकार प्राप्त गुणनफल में श्रेढि का अंतिम पद जोड़ने पर, दी हुई राशि का घन प्राप्त होता है ॥४५॥ (जिन दो अथवा अधिक राशियों के योग का घन निकालना है, उन्हें अलग-अलग स्थानों में स्थापित करते हैं ।) प्रथम तथा अन्य स्थानों के वर्ग निकालकर उनमें प्रत्येक को अन्य स्थानों की राशियों से गुणित कर तिगुणा करते हैं और जोड़ देते हैं । इस प्रकार प्राप्त योगफल में सब स्थानों की राशियों में से प्रत्येक के घन को मिलाते हैं तो दत्त राशियों के योग का घनफल प्राप्त होता है । (इस सूत्र द्वारा ग्रंथकार का अभिप्राय २३६ जैसी संख्या का घनफल, उसे (२०० + ३० + ६) रूप में परिवर्तित कर इन तीन राशियों के योग का घनफल निकालकर प्राप्त करना है ।) ॥४६॥ अथवा; दी गई संख्या में दाहिनी ओर से बाईं ओर की गिनती में अन्तिम अंक का घन; और अन्तिम अंक के वर्ग की तिगुनी राशि को केवल एक संकेतना स्थान द्वारा दाहिनी ओर हटाया जाता है और शेष स्थानों में पाये जाने वाले अंकों द्वारा गुणित किया जाता है ; तब ऊपर की भाँति शेष स्थानों में पाये जाने वाले अंकों का वर्ग केवल एक संकेतना दाहिनी ओर हटाया जाता है और ऊपर कथित अन्तिम अंक की तिगुनी राशि द्वारा उसे गुणित कर एक स्थान हटा कर रखा जाता है । ये राशियाँ इसी स्थिति में जोड़ दी जाती हैं । यह नियम यहाँ प्रयोज्य होता है ॥४७॥

(४५) $३ [१ \times २ + २ \times ३ + ३ \times ४ + ४ \times ५ + \cdots + \overline{\text{अ} - १} \times \text{अ}\} + \text{अ} = \text{अ}^३]$

(४६) $३\, \text{अ}^२\text{ब} + ३\, \text{अब}^२ + \text{अ}^३ + \text{ब}^३ = (\text{अ} + \text{ब})^३$ । इस नियम को दो से अधिक स्थान वाली संख्याओं के लिये प्रयोज्य बनाने के हेतु यहाँ स्पष्टतः अर्थ निकलता है कि $३\, \text{अ}^२ (\text{ब} + \text{स}) + ३\, \text{अ} (\text{ब} + \text{स})^२ + \text{अ}^३ + (\text{ब} + \text{स})^३ = (\text{अ} + \text{ब} + \text{स})^३$; और यह स्पष्ट है कि कोई भी संख्या दो अन्य उपयुक्त रूप से चुनी हुई संख्याओं के योग द्वारा प्ररूपित की जा सकती है ।

(४७) ग्रन्थकारद्वारा दिये गये सूत्र का अभिप्राय प्रदर्शित विधि से स्पष्ट हो जावेगा—

मान लो १५ घन का प्राप्त करना है । इसे दो स्थानों से स्थापित करके, निरूपित रीति से घनफल निकालते हैं । सूत्र में ग्रन्थकार ने अन्तिम अंक ५ के घन के योग का कथन नहीं किया है ।

	१	५		
$१^३ =$	१			
$१^२ \times ३ \times ५ =$	१	५		
$५^२ \times ३ \times १ =$		७	५	
$५^३ =$		१	२	५
	३	३	७	५

अत्रोद्देशकः

ऐकादिनवान्तानां पञ्चदशानां शरेक्षणस्यापि । रसवह्न्योर्गिरिनगयोः कथय घनं द्रव्यलब्ध्योश्च ॥४८॥
हिमकरगगनेन्दूनां नयगिरिशशिनां खरेन्दुबाणानाम् ।
वद मुनिचन्द्रयतीनां वृन्दं चतुरुदधिगुणशशिनाम् ॥४९॥
राशिर्घनीकृतोऽयं शतद्वयं मिश्रितं त्रयोदशभिः । तद्द्विगुणोऽस्मात्त्रिगुणश्चतुर्गुणः पञ्चगुणितश्च ॥५०॥
शतमष्टषष्टियुक्तं दृष्टमभीष्टे घने विशिष्टतमैः । एकादिभिरष्टान्त्यैर्गुणितं वद तद्घनं शीघ्रम् ॥५१॥
बन्धाम्बरर्तुगगनेन्द्रियकेशवानां संख्याः क्रमेण विनिधाय घनं गृहीत्वा ।
आचक्ष्व लब्धमधुना करणानुयोगगम्भीरसारतरसागरपारदृश्वन् ॥५२॥

इति परिकर्मविधौ पञ्चमो घनः समाप्तः ॥

घनमूलम्

षष्ठे घनमूलपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—
अन्त्यघनादपहृतघनमूलकृतित्रिहृतिभाजिते भाज्ये ।
प्राक्त्रिहतायस्य कृतिः शोध्या शोध्ये घनेऽथ घनम् ॥५३॥

१. ४८ और ४९ वें श्लोकों के स्थान में, M में निम्न पाठ है—
एकादिनवान्तानां रुद्राणां हिमकरेन्दूनाम् ।
वद मुनिचन्द्रयतीनां वृन्दं चतुरुदधिगुणशशिनाम् ॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

एक से लेकर ९ तक संख्याओं और १५, २५, ३६, ७७ और ९६ के घन क्या होंगे ? ॥४८॥ १०१, १७२, ५१६, ७१७ और १३४४ के घन क्या होंगे ? ॥४९॥ संख्या २१३ का घन किया जाता है । इस संख्या की दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी और पांचगुनी राशियों के भी घन करने पर प्राप्त होने वाली राशियाँ प्राप्त करो ॥५०॥ यह देखा जाता है कि १६८ में एक से लेकर आठ तक की समस्त संख्याओं का गुणन करने पर प्राप्त राशियाँ घन राशियों से सम्बन्धित हैं । उन घन राशियों को शीघ्र बतलाओ ॥५१॥ हे करणानुयोग गणित की क्रियाओं के अभ्यासरूपी गहरे तथा उत्कृष्ट समुद्र के पारदृष्टा ! दाहिनी ओर से बाईं ओर ४, ०, ६, ०, ५ और ९ क्रमानुसार लिख कर प्राप्त संख्या का घनफल शीघ्र बतलाओ ॥५२॥ इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, घन नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

घनमूल

परिकर्म-क्रियाओं में षष्ठम घनमूल क्रिया सम्बन्धी निम्नलिखित नियम है—

अन्तिम घन स्थान तक के अंकों द्वारा निरूपित संख्या में से सबसे अधिक सम्भव घन संख्या घटाओ। तब, (अग्रिम) भाज्य स्थान द्वारा निरूपित अंक को स्थिति में रखने के पश्चात् उसे उस घन के घनमूल के वर्ग की तिगुनी राशि द्वारा भाजित करो । तब (अग्रिम) शोध्य स्थान द्वारा निरूपित अंक को स्थिति में रखने के पश्चात् उसमें से उपर्युक्त भजनफल के वर्ग की त्रिगुणित राशि को उपर्युक्त (सबसे अधिक सम्भव घन के) मूल द्वारा गुणित करने से प्राप्त राशि को घटाओ । और तब (अग्रिम) घन स्थान द्वारा निरूपित अंक को स्थिति में रखने के पश्चात् उसमें से ऊपर प्राप्त हुए भजनफल के घन को घटाओ ॥५३॥

क्रमशः ....

भगवान महावीर स्वामी का सन्मार्ग

आज हम वर्धमान स्वामी के शासन काल में जी रहे हैं, भगवान महावीर स्वामी का जन्म 27 मार्च, 598 ई.पू. राजा सिद्धार्थ व रानी त्रिशला के घर में कुण्डग्राम में हुआ था। जब कुमार वर्धमान का जन्म हुआ तब भारत में चारों ओर हिंसा का बोल-बाला भी शुरू हो गया था, राजकुमार महावीर तीस वर्ष तक घर में रहे, राजसी वैभव से विरक्त रहकर आत्मसाधना करते रहे। उनका जीवन जल में कमल के समान संसार से अलिप्त रहा। 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने परमात्मा पद प्राप्त करने हेतु दीक्षा ली, बारह वर्ष तक दिगम्बर बन कठोर साधना करते रहे। साधना के काल में एक ऐसा समय भी आया जब उनके पूर्व बद्ध कर्मों की जंजीर टूट गई वे वीतरागी होकर सर्वज्ञ हो गये।

सर्वज्ञ बनने के पश्चात् उन्होंने तीस वर्षों तक जगत के जीवों को सर्व जीव मैत्री (अहिंसा), वीतरागता एवं आत्म साधना (सद्ध्यान) तथा मोक्षमार्ग का उपदेश दिया।

महावीर ने कहा कि इन आत्म विकारों से छूटने का एक मात्र उपाय आत्म श्रद्धान, आत्मज्ञान एवं आत्मनिमग्नता है। भगवान महावीर कहते हैं, जहाँ गुण नहीं वहाँ कुछ भी नहीं, शब्द की ओर नहीं अर्थ की ओर देखो। शब्द के गर्भ में रहने वाले अर्थ के लिए मन चाहिए। भाव महत्वपूर्ण है। निर्मोही गुरुओं की उपासना अवगुणों का विसर्जन है। महावीर ने वीरत्व से अपनी इन्द्रियों की दासता से मुक्ति पाई। आत्मा को जीता, इसलिए वह जिन कहलाये, जो उनके उपासक हैं वे जैन हैं। शान्ति क्या है, कहाँ है यह महावीर ने बताया है। सरोवर के जल में कंकड़ छोड़ने से उसकी शान्ति भंग हो जाती है। तरंगे उठती हैं, तरंग या लहर के कारण सरोवर का अंतरंग दिखाई नहीं देता, अंतरंग तब ही दिखाई देता है जब लहरें शान्त हो जाती हैं। इसी प्रकार रागद्वेष, कषाय की लहरों के कारण हमें अपना अंतरंग, आत्मा दिखाई नहीं देती। वास्तव में हमारी दृष्टि की क्षमता, अंतरंग अर्थात् आत्मा को देखने की होती है। किन्तु रागद्वेष रूपी तरंगों के कारण हम आत्मा या अपने अंतरंग से दूर हैं। हमारे अंतरंग में भावि भगवान बैठे हैं।

भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की उतनी अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। एक ओर उन्होंने जीव वध को द्रव्य हिंसा बतलाया तो दूसरी ओर मानव के शोषण को भी हिंसा का ही एक भेद; भाव हिंसा बतलाया। इतना ही नहीं बल्कि किसी का तनिक दिल दुखाना, अपशब्द कहना, क्रोध करना, ईर्ष्या एवं द्वेष को भी हिंसा की ही परिभाषा में अभिव्यक्त किया। महावीर का धर्म सदैव ही अनेकान्तवादी रहा। महावीर ने जातिवाद से दूर रहकर अपने धर्म में मानव मात्र को दीक्षित किया। भगवान महावीर का कहना था कि धर्म केवल किसी मानव विशेष के लिए नहीं अपितु प्राणी मात्र के कल्याण के लिये है। धर्म सार्वभौम है, उसे संकीर्णता की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता। मनुष्य के जीवन में समत्व व शान्ति का होना अतिआवश्यक है, क्योंकि इन गुणों के होने पर ही प्रत्येक व्यक्ति पारस्परिक सद्भाव, सहानुभूति और प्रेम की भावना रखेगा। शान्ति के लिए आवश्यक है 'इच्छाओं का निरोध'। इच्छाओं को जीतने पर ही समता आयेगी।

आइये, हम अपने आत्मस्वरूप को जाने, पहचाने और जागरुक होकर आत्मस्वरूप पाने हेतु रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग धारण कर महावीर जैसे आत्मा से परमात्मा बनने का प्रयास करें। यही भगवान महावीर का सन्देश है।

॥ जय जिनेन्द्र ॥

भगवान महावीर की जय

संकलन - सुशीला पाटनी
आर.के. हाउस, मदनगंज-किशनगढ़

ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति

मन, प्रबन्ध और ध्यान विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन डी.लिट् की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा से संदर्भित विषय ।

अनुसंधानकर्ता-डॉ. संजय कुमार जैन

गतांक से आगे ....

उत्तानपादासन - इस आसन में दोनों पैर 60 डिग्री तक उठाते हैं, यह विपरीतकरणी की अर्ध अवस्था है। कब्ज अजीर्ण दूर होता है एवं पैरों की मांसपेशियों की मालिश होती है। स्नायु-दुर्बलता दूर करता है।

विपरीतकरणी आसन - मस्तिष्क में प्रभावकारी रक्त-संचरण करता है। थायराइड ग्रंथि की सक्रियता बनाए रखता है। अजीर्ण व हार्निया को ठीक करने में लाभकारी है।

भुजंगासन - मेरुदण्ड को लचीला बनाता है, गर्दन और कंधे के रोगों को ठीक करने में लाभकारी है। वायुदोष दूर करता है। दमा रोग में लाभकारी है।

वज्रआसन - भोजन के उपरांत किया जाता है, पाचन क्रिया ठीक रहती है। जंघाए वज्र के समान तथा पिंडली की माँसपेशियाँ मजबूत होती है।

उत्तानमण्डूकासन - पीठ का दर्द दूर होता है, कंधों का लोच बढ़ाता है, जंघाओं में वसा कम होती है।

ताड़ासन - एकाग्रता बढ़ती है। ऊँचाई बढ़ती है। मेरुदण्ड लचीला बनता है।

वृक्षासन - एकाग्रता बढ़ती है। शरीर व मन के संतुलन को बढ़ाता है। जंघायें वज्र के समान तथा पिंडली की माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं।

शवासन - आसनों के अभ्यास से हुई थकावट को दूर करने में एवं उच्च रक्तचाप तथा हृदय के रोगों में लाभकारी है।

सूर्य नमस्कार आसन - प्रणामासन, सेस्त उत्तानासन, पादहस्तासन, पर्वतासन, अष्टांगनमस्कार, भुजंगासन, पर्वतासन, अश्रव संचालनासन से मन की एकाग्रता एवं शांति। भुजाओं, हाथ, पैरों, सीना, कंधों की मांसपेशियों का व्यायाम। आमाशय की चर्बी कम, रक्त संचार में तेजी मेरुदण्ड को लचीला बनाता है।

प्राणायाम से मन की एकाग्रता- ज्ञानार्णव के प्राणायाम वर्णन सर्ग में श्री शुभचन्द्राचार्य कहते हैं-

अतः साक्षात्य विजेयः पूर्वमेव मनीषिभिः।
मनागप्यन्यथा शक्यो न कर्त्तुं चित्तनिर्जय ॥ 2 ॥

अर्थात् – ध्यान की सिद्धि के लिए पूर्वाचार्यों ने प्राणायाम की प्रशंसा की है, इस कारण ध्यान करने वाले बुद्धिमान पुरुषों को प्रथम से ही प्राणायाम को विशेष प्रकार से जानना चाहिए क्योंकि इसके जाने बिना अन्य प्रकार से किंचितमात्र भी मन जीवन को समर्थवान नहीं बना सकता।

आहार शुद्धि से मन और ध्यान पर प्रभाव –

आज वैज्ञानिक युग से सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य जैसा भोजन करता है वैसा उसका मन होता है और वैसा उसका स्वभाव होता है। आहार बलवर्धक स्वस्थ मन व तन का कारक होना चाहिए। सभी शारीरिक वैज्ञानिकों का कथन है कि वह स्वस्थ्य है जिसकी वात, पित्त, कफ, धातुएं विषम नहीं है, जठराग्नि जिसकी ठीक काम कर रही है, मल क्रिया में अनियमितता नहीं है, जिसकी आत्मा शान्ति में कारण है, जिसकी इंद्रिया शान्त हैं व जिसका मन शान्त है। इन सब की पूर्ति आहार शुद्धि से हो सकती है।

अहिंसकाहार से परिणामों की निर्मलता और सम्यक्ध्यान की प्रसिद्धि–

अहिंसकाहार मात्र आहार नहीं है, वह एक सुविकसित विचार/जीवन–पद्धति भी है। यह एक परिपूर्ण लाइफस्टाइल (जीवन–शैली) है, जो सदियों के अनुभवों के बाद विदेशी लोगों के जीवन में भी आस्तित्व में आयी है। अहिंसा भारतीय संस्कृति का नवनीत है। वह उसकी प्रमुख आधार भूमि है, उसके बगैर हम भारत की कल्पना ही नहीं कर सकते। शाकाहार, वस्तुतः अहिंसा के इस विकास का ही व्यवस्थित शास्त्र है। ध्यान रहे कि माँसाहार पर्यावरण–प्रदूषण की सबसे बड़ी वजह है। मनुष्य स्वयं सह–आस्तित्व से कतरा रहा है अतः वह अन्य प्राणियों के साथ अस्तित्वमान् रहने की कल्पना ही ठीक से नहीं कर पा रहा है। प्रकृति के सारे सत् परस्पर समायोजित हैं। मनुष्य समृद्ध बौद्धिक विकास के प्रकृति के बावजूद भी इस मर्म को समझ नहीं पा रहा है, फलस्वरूप वातावरण को अहिंसात्मक आचार–विचार की वैज्ञानिकता एक संस्कृति का मूल आधार है। हमारी संस्कृति वह जीवन शैली है, जो अहिंसात्मक आचार–विचार की वैज्ञानिकता से विकसित हुई है; जियो और जीने दो इस वैज्ञानिकता का प्रमुख तत्त्व है।

अहिंसकाहार या शाकाहार का प्रतिफल यह है कि शरीर में अनेक रोगों की उत्पत्ति नहीं होती है, परिणाम सुशान्त रहते हैं, धर्म में मन लगता है, जिनालय में प्रवेश करने एवं शास्त्र छूने की योग्यता रहती है। शाकाहारी प्राणी के मुख से दुर्गन्ध नहीं आती। शरीर भी हाथी, घोड़े जैसा और भीम, अर्जुन जैसा शक्तिवान–बलशाली बनता है। ऐसा बलशाली धैर्यवान मानव ही उत्तम ध्यानी और मोक्षगामी भी हो सकता है।

प्रतिक्रमण

– सह-संपादकीय

जैनाचार में 'प्रतिक्रमण' का विशिष्ट स्थान है। इसमें प्रथम श्रेणी मुनीश्वरों के लिए है तथा दूसरी श्रेणी श्रावकों के लिए नियत है। जिन गृहस्थों ने श्रावकों के व्रतों को अंगीकार कर लिया है उनके लिए 'प्रतिक्रमण' आवश्यक है क्योंकि जो व्रत लेते हैं लिये गये व्रतों में अतिचार, अनाचार से जो दोष लग जाते हैं उन्हें 'प्रतिक्रमण' के माध्यम से समाप्त किया जाता है। जैनागम में आचार्यों ने उल्लेख करते हुए लिखा है कि –

एसो पडिक्कमण विहि पण्णत्तो जिणवरेहिं सव्वेहिं।
संजम तवट्ठियाणं णिग्गंथाणं महरिसीणं ।।

अर्थात् यह 'प्रतिक्रमण' विधि संयम-तप में स्थित निर्ग्रन्थ महर्षियों के लिए समस्त जिनवरों के द्वारा प्ररूपित है।

प्रतिक्रमण का व्युत्पत्तिपरक अर्थ–

जैन दर्शन में 'प्रतिक्रमण' की सामान्य व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है कि – 'प्रतिक्रमण' दो शब्दों के संयोग से बना है प्रति+क्रमु। प्रति उपसर्ग है और क्रमु धातु है। प्रति का अर्थ है– प्रतिकूल और क्रमु का अर्थ है – पद निक्षेप। दोनों का समन्वित अर्थ हुआ– जिन कदमों से बाहर गये हैं, उन्हीं कदमों से वापस लौट आएँ। जो साधक किसी प्रमाद के कारण सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र स्व स्थान से हटकर मिथ्यात्व, अज्ञान और असंयम रूप स्थान में चला गया हो उसका पुनः स्व स्थान में लौट आना 'प्रतिक्रमण' है अथवा सम्पूर्ण चेतना को समेट लेना 'प्रतिक्रमण' है। दोष क्षेत्रों से वापस आत्मशुद्धि के क्षेत्र में लौट आने का क्रम 'प्रतिक्रमण' है। 'प्रतिक्रमण' के बिना आत्मशुद्धि सम्भव नहीं है।

प्रतिक्रमण का स्वरूप –

मानव को अपनी जीवन यात्रा में पद-पद पर अन्तरंग व बाह्य दोष लगा करते हैं, जिनका शोधन एक श्रेयोमार्गी के लिए आवश्यक है। अनेक सावधानी रखते हुए भी किसी प्रकार के प्रमाद हो जाने की भी आशंका उन्हें रहती ही है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक क्रिया 'प्रतिक्रमण' जैन धर्म का प्राण है। श्रमणचर्या में कहा है कि –

जीवे प्रमाद जनिता प्रचुरा प्रदोषाः यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।

अर्थात् जीव में प्रमाद जनित प्रचुर दोष हैं। वे प्रतिक्रमण से प्रलय को प्राप्त होते हैं। मूलाचार में आचार्य श्री कहते हैं –

दव्वे खेत्ते काले भावे य कदावराहसोहणयं।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवचकायेण पडिक्कमणं ।।

अर्थात् निन्दा गर्हा पूर्वक (युक्त) 'प्रतिक्रमण' द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव में मन, वचन, काय से किए हुए दोषों का शोधन करने वाला है। भगवती आराधना की विजयोदयी टीका में आचार्य श्री कहते हैं कि –

स्वकृताद्शुभयोगात्प्रति निवृत्तिः प्रतिक्रमणं । गा. 6 पृ. 20।

स्वतः के द्वारा किये हुए अशुभ योग से परावर्त्त होना अर्थात् 'मेरे दोष मिथ्या होवें' ऐसा कहकर पश्चाताप करना 'प्रतिक्रमण' है। आगे कहा है कि–

कृतातिचारस्य यतेस्तदतिचारपराङ्मुखता योगत्रयेण हा
दुष्टं कृतं चिंतितमनुमन्तं चेति परिणामः प्रतिक्रमणम् । गा.10पृ.30।

जिस साधु ने अपने व्रतों में दोष लगाया है उसका उन दोषों से विमुख होकर, हाँ! मैने बुरा किया या बुरा विचारा या उसमें अनुमति दी, इस प्रकार के परिणामों को 'प्रतिक्रमण' कहते हैं। आलोचना के अतिचार होने पर इसके विषय में मन में ग्लानि करना, अज्ञान से, प्रमाद से, तीव्र कर्म के उदय से और आलस्य से मैंने यह अशुभ कर्म का बंध करने वाला कर्म किया है, मैंने यह दुष्ट कर्म किया है ऐसा उच्चारण करना प्रतिक्रमण है। नियमसार प्राभृत प्रतिक्रमणाधिकार में लिखा है–

व्रतेषु संभूतातिचारादि दोषनिवृत्त्यर्थ 'मिच्छा मे दुक्कड़' इत्यादि दण्डक
सूत्रोच्चारण पूर्वकं यत्क्रिया क्रियते साधुभिः तत्प्रतिक्रमणं नाम । पृ.191।

अर्थात् व्रतों में उत्पन्न हुए अतिचार आदि दोषों को दूर करने के लिए 'मेरा दुष्कृत मिथ्या होवे' इत्यादि दण्डक-सूत्रों का उच्चारण करते हुए साधु जो क्रिया करते हैं, उसे 'प्रतिक्रमण' कहते हैं। भगवती आराधना ग्रन्थ की गाथा 511 की विजयोदयी टीका में आचार्य श्री अपराजित सूरि जी ने मन, वचन, काय की अपेक्षा से प्रतिक्रमण के तीन भेद बतलाये हैं–

1. मनः प्रतिक्रमण – हाँ! मैंने पाप कर्म किया है, ऐसा मन में विचार करना मनः प्रतिक्रमण है।
2. वचन प्रतिक्रमण – सूत्रों का सम्यक् उच्चारण करना वचन प्रतिक्रमण है।
3. काय प्रतिक्रमण – काय द्वारा दुष्कृत्यों का आचरण न करना काय प्रतिक्रमण है।

क्रमशः ....

भगवान महावीर स्वामी जन्म जयन्ती व 25 वाँ मुनि दीक्षा रजत जयन्ती समारोह

सन्त शिरोमणी आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य आर्जवसागर जी मुनि महाराज के पच्चीसवें दीक्षा रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में श्री 1008 नेमिनाथ भगवान के त्रय कल्याणक स्थली ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) परिसर जूनागढ़ में मुनि संघ के सानिध्य में भव्य आयोजन के साथ भगवान महावीर की जन्म जयन्ती एवं गुरुवर की 25 वीं दीक्षा जयन्ती का कार्यक्रम 2012 अप्रैल 4 और 5 तारीख को भव्यता के साथ मनाया गया।

मंगल कार्यक्रम

- प्रातः मुनि संघ के साथ जिनालय दर्शन पूर्वक वाद्य घोष के साथ मंच की ओर पदार्पण हुआ।
- श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी व आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी के चित्र का अनावरण डॉ. डी.आर. जैन-जयपुर, विनोद जैन-अजमेर और सुशील कुमार गंगवाल-पाण्डिचेरी ने किया।
- मंगलाचरण ब्र. बहनों द्वारा किया गया।
- गुरुवर आर्जवसागर जी का पाद प्रक्षालन श्रीमान नरेश भाई एवं कनुभाई सूरत, श्री भरत जैन, अरविन्द जैन दमोह वालों ने किया।
- श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी, आचार्य श्री एवं गुरुवर की पूजन सम्पन्न हुई।
- शास्त्र दान 25 भव्यों द्वारा मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी व क्षु. श्री 105 हर्षितसागर जी के लिए दिया गया।
- अतिथि सत्कार सम्मान शाल, श्रीफल, आदि से किया गया।
- विद्वत् उद्बोधन के रूप मुनिश्री द्वारा हुई पच्चीस वर्ष की प्रभावना के सन्दर्भ में भोपाल के डॉ. अजित जैन ने किया।
- पच्चीस वें दीक्षा वर्ष (रजत जयन्ती वर्ष) पर 25-25 धार्मिक कार्य के संकल्प करने वालों के सम्मान की बात कही।
- आरती; 25 दीपकों से पूज्य मुनिवर की गयी।

इस महोत्सव में अनेक प्रदेश (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडू) के लोगों ने पुण्य लाभ लिया।

गुरुवर से 25 वर्ष में हुए धर्म प्रभावना के विशेष 25 कार्यों के बारे में भोपाल के डॉ. अजित जैन ने जनता के सामने मंच से बतलाया। लोगों ने भी 25 वें रजत वर्ष के उपलक्ष्य में 25 कार्य करने के लिए मुनिश्री से अपना भाव व्यक्त कर आशीर्वाद लिया। श्री कमल काला जयपुर की ओर से मन्दिरों के लिए अष्ट प्रातिहार्य व अष्टमंगल वितरित किये गये। बाहर से आये हुये अतिथियों को और गिरनार यात्रा में साथ रहे लोगों को सिद्ध क्षेत्र तारंगा कमेटी और सूरत वालों की ओर से सम्मानित किया गया। अन्त में गुरुवर का प्रवचन हुआ जिसमें नेमि, राजुल, प्रद्युम्नकुमार, उदधि कुमारी इनके वैराग्य के बारे में और गुरु उपकार व सच्चा जन्म कब होता है? आदि के बारे उपदेश दिया। अन्त में वात्सल्य भोज दिया गया। गुरुवर ने ससंघ अप्रैल की 6 तारीख को प्रातः 6 बजे तलहटी से निकलकर ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) 5 वीं टोंक सहित दूर-दूर से आये हुए भक्तों के साथ पर्वत की वन्दना बहुत सानन्द रूप से सम्पन्न की।

जीवन

हनुमान सिंह गुर्जर, तहसीलदार

मानव जीवन क्यों दुर्लभ, यह सुनकर आज निहाल हुआ ।
गुरुवर आपकी बातों का, सचमुच प्रभाव तत्काल हुआ ।।
झूठी सफलता पाने में, यह जीवन व्यर्थ किया हमने ।
सपने में कभी सोचा न था, वही मिला तो आज खुशहाल हुआ।
संसार सदा से क्षण भंगुर, जिन आतम वैभव अविनाशी।
बिना गुरु मैं समझ ना पाया, मेरा जीवन रोज हलाल हुआ।।
चमत्कार से कम नहीं गुरुवर, जो अब तक नहीं वह आज हुआ।
दुःख का कारण है राग-द्वेष और सद्ज्ञान बिना बेहाल हुआ।।
अब तक मैंने कुछ नहीं किया, था सबल किन्तु असमर्थ रहा।
अब चलना है मुझे उसी राह, जहाँ आतम मालामाल हुआ ।।
मैं आजन्म पुलन्दा दोषों का, और घड़ा भर लिया पापों का ।
कर देना आप क्षमा मुझको, मन ही मन बहुत मलाल हुआ ।।
पापों का संचय खूब किया, नहीं पुण्य कर्म मैं कर पाया ।
कट रहा पाप; बस पुण्य रहा, गुरु दर्शन से यह कमाल हुआ।।

भाव विज्ञान परीक्षा बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से प्रारम्भ की गई पाठशालाओं में शुरू किए विषय जैनागम संस्कार, जीवन संस्कार हैं। सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण समिति एवं श्रावक साधना संस्कार शिविर में विद्यार्थी / श्रावक भाग लेते हैं । इन सभी की ज्ञान वृद्धि में प्रेरणा हेतु परीक्षा बोर्ड प्रारम्भ किया गया है।

सभी साधर्मी बन्धुओं से अनुरोध है कि वे शास्त्रों का अध्ययन करें तथा जो भी परीक्षा देना चाहते है वे परीक्षा देकर विधिवत प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रमाण पत्र को चार कलर मल्टी कलर में तैयार किया गया है। प्रमाण पत्र की अनुमानित लागत रू 4 = 25 प्रति नग है। चाहे गए प्रमाण पत्रों की राशि चेक से भेज सकते हैं अथवा 'भाव विज्ञान' के स्टेट बैंक आफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट / कोर बैंकिंग सुविधा के अन्तर्गत SB A/C No. 63016576171 एवं IFSS CODE BIN. 0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति भेजकर मनी रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

पोस्ट भेजने का पता: भाव विज्ञान, एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.)

गिरिराज गिरनार जी में सम्पन्न हुआ श्रुतपंचमी पर्व महोत्सव

परम रमणीय पर्वत आरावलियों व घने जंगल से सुशोभित गिरिराज गिरनार व ऊर्जयन्त गिरि से भ. नेमिनाथ सहित अनुरूद्ध कुमार, शम्भु कुमार और प्रद्युम्न कुमार आदि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनियों ने निर्वाण मोक्ष को प्राप्त किया है एवं जिस पर्वत का स्पर्श मात्र महापुण्य का कारण है ऐसे गिरनार पर्वत की तलहटी में बने बंडीलाल जी दिगम्बर जैन मंदिर एवं धर्मशाला के अन्तर्गत दिगम्बर जैन मंदिर के परिसर में दिनांक 26 मई 2012 को पूरे देश से पधारे लगभग 150 धर्मानुरागी की उपस्थिति में तथा प.पू. गुरुवर श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में श्रुत पंचमी महापर्व पर ''श्रुत स्कन्ध'' महामण्डल विधान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में दिल्ली से श्री लोकेश कुमार जी, अजमेर से श्री अजय जी दनगसिया, जयपुर से श्री सुशील जी पहाड़िया एवं पारस जी कासलीवाल, सूरत से श्री नरेश कुमार जी, उदयपुर से श्री सुरेश चंद जी, पथरिया से श्रीमती मायादेवी एवं डॉ. संजय जैन, फुटेराकला से श्री मनोज कुमार जी, भोपाल से डॉ. सुधीर जैन, जूनागढ़ से श्री प्रदीप जी एवं श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन धर्मशाला के ट्रस्टी श्री धनपाल जी एवं श्री तेजस तलाटी भी उपस्थित थे। सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं से क्रम से प. पू. मुनिवर के चरणों में श्रीफल भेंट करके आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रुत स्कन्ध विधान के पश्चात कार्यक्रम का प्रारम्भ आचार्य गुरुवर 108 विद्यासागर जी एवं गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज के चित्रों का अनावरण जयपुर से पधारे श्री पारस जी कासलीवाल व श्री सुशील जी पहाड़िया के कर कमलों द्वारा किया गया। ज्ञान दीप का प्रज्ज्वलन सूरत से पधारे श्री नरेश कुमार जी जैन (10 धर्मानुरागी सहित) के द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री दिगम्बर जैन समाज

सूरत के पदाधिकारियों ने श्री नरेश जी जैन के नेतृत्व में प.पू. मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी को श्रीफल भेंट कर चातुर्मास हेतु सूरत की तरफ गमन करने का निवेदन किया। साथ ही दिगम्बर जैन मंदिर बंडीलाल के ट्रस्टी श्री धर्मपाल जी एवं तेजस तलाटी ने मुनिश्री से चातुर्मास का निवेदन किया। धर्म सभा का प्रारम्भ ब्र. दीदी के मंगलाचरण के द्वारा हुआ। महाराज श्री के आर्शीवचन के पूर्व सभी शहरों से पधारे धर्म प्रेमी बन्धुओं ने बोली लेकर महाराज श्री के कर कमलों में शास्त्र भेंट किये।

इस अवसर पर महाराज श्री ने अपने प्रवचनों में गुरुवर विद्यासागर जी की कृति मूकमाटी से पथ में पड़ी मिट्टी व कुम्भकार की बातचीत का उदाहरण समझाते हुये बताया किस प्रकार गुरु धर्मरूपी नाव से शिष्य के दोष रूपी कंकड पत्थर को हटाते हैं तथा क्षुल्लक, ऐलक व अंत में मुनि का आकार देते हैं। किस प्रकार कुम्भकार मिट्टी को घड़ा का रूप देने के पूर्व अग्नि परीक्षा लेता है उसी प्रकार गुरु भी शिष्य की सहनशीलता की परीक्षा लेकर यथायोग्य धर्म की शिक्षा देकर उनको अपने पथ पर चलने की शिक्षा देते हैं। प.पू. मुनिवर के अनुसार जो व्यक्ति जीवन में जीने की कला सीख लेता है वह ही वास्तविक रूप से मनुष्य जीवन की सार्थकता सिद्ध करता है। पंच नमस्कार मंत्र का जाप करने तथा भगवान का दर्शन मात्र करने से असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है।

27 मई को मुनिश्री ने गिरनारजी की वंदना करते हुए प्रथम टोंक पर दर्शन किए तथा 28 मई को पाँचों टोंको की वंदना पूरे देश से पधारे भक्तों ने मुनिश्री के साथ हर्षोल्लास, उत्साह एवं भक्तिपूर्वक पूर्ण की।

पयूर्षण पर्व पर बूचड़खाने व मांस की दुकानें बन्द रखने के लिए शासन को भेजने के लिए पत्र का प्रारूप

माननीय मुख्यमंत्री महोदय

....

माननीय मंत्री महोदय
नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग,

....

विषय : जैन पर्व–''पर्यूषण पर्व'' के प्रसंग पर 10 दिनों तक पशुवध गृह (बूचड़खाने) बन्द रखने एवं मांस विक्रय की दुकानें भी बन्द रखे जाने के संबंध में।

मान्यवर,

1. देश के उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली के न्यायमूर्ति श्री एच.के. सेमा एवं श्री मार्कण्डेय काटजू ने 14 मार्च, 2008 को हिंसा विरोधक संघ विरूद्ध मिर्जापुर मोती कुरैश जनात एवं अन्य (सिविल अपील नं. 5469, 5470, 5472, 5476, 5478, 5479-80-81/2005) के संबंध में 36 पृष्ठीय ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। यह फैसला उच्च्तम न्यायलय की बेवसाइट- www.supremecourtofindia.nic.in तथा www.judis.nic.in पर एवं All India Reporter (AIR)-July. 2008-Supreme Court, 1892 S.C.-S.C. 1903 पर भी उपलब्ध है। इस फैसले में जैन पर्व **''पर्यूषण पर्व''** के 9 दिनों के लिए पशुवध गृह एवं मांस की दुकानों को बंद करने हेतु अहमदाबाद नगर निगम द्वारा लगाये गये प्रतिबंध को उचित माना था।

2. **बिहार सरकार** के **गृह (विशेष) विभाग** के **उपसचिव** के द्वारा **पत्र संख्या-सी/जे.ए.-5501/08-8984, पटना, दिनांक 29 अगस्त, 08** में प्रदेशस्थ सभी जिला पदाधिकारियों को निर्देश प्रदान किया था कि जैनों का त्यौहार दिनांक 04 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2008 तक मनाया जाएगा। अतएवं जैन त्यौहार के अवसर पर याचित आवेदन के आलोक में यथोचित कार्यवाही करने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाय।

3. इस सम्बन्ध में **राजस्थान सरकार** के **स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर** के **सचिव** के द्वारा जैन धर्म के ''**पर्यूषण पर्व**'' के 9 दिनों को ''**अहिंसा दिवस**'' घोषित किया था। **शासनादेश क्रमांक प. 24 (ग)(13)/नियम/डीएलबी/89/5135-5330, दिनांक 30-08-2008** में भाद्रपद शुक्ल 1, 2, 3, 4, 5, 8, 10, 14 एवं आसौज कृष्ण 1 वि.सं. 2065 के 9 दिनों तक राज्य के सभी बूचड़खाने एवं मांस-मछली की सभी दुकानें बंद रखे जाने का आदेश निर्गमित किया था।

4. जैन-धर्म के दिगम्बर जैन समुदाय एवं श्वेताम्बर जैन समुदाय के भी अनेक व्यक्तियों, संस्थाओं, जन-प्रतिनिधियों, विधायकों एवं सांसदों आदि के द्वारा दोनों ही समुदायों के द्वारा अपनी-अपनी परम्पराओं में मान्य तिथियों में पयूर्षण पर्व के अति पावन प्रसंग पर प्रदेशस्थ सभी बूचड़खाने एवं मांस विक्रय की दुकानें बंद रखे जाने हेतु माँग की जाती रही है।

5. चूँकि वर्ष 2009 में जहाँ श्वेताम्बर जैन समुदाय के द्वारा 17 से 24 अगस्त 2009 तक के दिनों में पूर्यषण पर्व के 8 दिनों तक धार्मिक समायोजन सम्पन्न किया गया, वहीं दिगम्बर जैन समुदाय द्वारा 24 अगस्त से 4 सितम्बर, 2009 तक पूर्यषण पर्व के 12 दिनों तक धार्मिक अनुष्ठान किया था।

6. इस सम्बन्ध में **राजस्थान शासन** के **निर्देशालय-स्थानीय निकाय विभाग, राजस्थान, जयपुर** के **उप सचिव** के द्वारा श्वेताम्बर जैन समुदाय के द्वारा पर्यूषण पर्व के 8 दिनों यानि 17 से 24 अगस्त, 09 तक के लिए राज्य के समस्त बूचड़खाने एवं मांस-मछली की दुकानों को बंद रखे जाने हेतु प्रथमतः **समसंख्यक पत्रांक क्रमांक प. 24 (ग)(13)/नियम/डीएलबी/89/पार्ट-II ए 438-625, दिनांक 22-07-2009** प्रसारित किया था।

7. तत्पश्चात् दिगम्बर जैन समुदाय की माँग/भावनाओं को भी दृष्टि में रखकर इस समुदाय द्वारा **पर्यूषण पर्व (दशलक्षण पर्व)** के वर्ष 2009 के बारह दिनों यानि 24 अगस्त से 04 सितम्बर, 2009 तक राजस्थान राज्य के समस्त बूचड़खाने एवं मांस-मछली की दुकानों को बंद रखने जाने हेतु **राजस्थान शासन** के **निर्देशालय-स्थानीय शासन निकाय विभाग, राजस्थान, जयपुर** के **उप शासन सचिव** द्वारा दिनांक **28-07-2009** को **पत्र क्रमांक प. 24 (ग)(13) /नियम /डीएलबी/89/पार्ट-II, 647-735**, आदेश निर्गमित किया था।

8. अतएव इस आंशिक संशोधित आदेश के अनुसार दोनों ही जैन समुदायों द्वारा मान्य अपनी-अपनी तिथियों में पर्यूषण पर्व संबंधी कुल 19 दिनों हेतु 17 अगस्त से 04 सितम्बर, 2009 तक राजस्थान प्रदेश में स्थित समस्त बूचड़खाने एवं मांस-मछली विक्रय की दुकानों को बंद रखे जाने के आदेश वर्ष 2009 में प्रसारित किए गए थे।

9. **छत्तीसगढ़ शासन** के **नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग, दाउ कल्याण सिंह भवन, रायपुर** के **अवर सचिव** द्वारा **क्र. 4124/4189/18/2006, रायपुर, दिनांक 12-08-2009** को जैन पूर्यषण पर्व के अवसर पर भाद्रपद वदी द्वादस से भाद्रपद सुदी चतुर्थी तक के 8 दिवसों तक पशुवध गृह एवं मांस बिक्री की दुकानें बंद रखे जाने एवं इस शासनादेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने हेतु प्रदेश के समस्त कलेक्टर, आयुक्त नगर निगम तथा मुख्य नगरपालिका अधिकारी/नगर पालिका परिषद् एवं नगर पंचायतों को जारी किया गया था।

10. माननीय महोदय से निवेदन है कि **सुप्रीम कोर्ट** के द्वारा प्रदत्त उपरिलिखित फैसले के परिप्रेक्ष्य में तथा **बिहार राज्य शासन, राजस्थान राज्य शासन** एवं **छत्तीसगढ़ राज्य शासन** के द्वारा निर्गमित विभिन्न शासनादेशों के समान ही इस वर्ष के **पर्यूषण पर्व-द्वितीय भाद्रपद सुदी चतुर्थी से द्वितीय भाद्रपद सुदी चतुर्दशी** तक यानी **19 सितम्बर से 28 सितम्बर 2012** तक के दिनों में तथा आगामी प्रत्येक वर्ष के लिए भी **इन्हीं तिथियों** हेतु (तिथियों के आधार पर तत्कालीन वर्ष के दिनांकों का निर्धारण कराकर) प्रदेश में स्थायी शासनादेश जारी करके **पर्यूषण पर्व के 11 दिनों को ''अहिंसा दिवस''** घोषित कर उन दिवसों में राज्य के सभी बूचड़खाने, मांस विक्रय केन्द्रों को बंद करने का आदेश प्रसारित किया जाये।

11. इस संबंध में आपके द्वारा वर्ष 2012 के पर्यूषण पर्व के उक्त 10 दिनों तक एवं आगामी प्रत्येक वर्ष हेतु स्थायी शासानादेश अतिशीघ्र प्रसारित कर आदेश की एक प्रति हमें प्राप्त हो ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ऐसा आपसे निवेदन है।

धन्यवाद!

संलग्न-

1. सुप्रीम कोर्ट का उपरिलिखित फैसला। 2. बिहार शासन के शासनादेश की छाया प्रति।
3. राजस्थान शासन के स्वायत्त शासन विभाग के द्वारा निर्गमित आदेशों की एक-एक छाया प्रतियाँ।
4. छत्तीसगढ़ शासन के शासनादेश की छाया प्रति।

सम्मानीय !

जैन धर्म में ''**पर्यूषण पर्व**'' का अत्यधिक महत्व है। इसी की महत्ता को दृष्टि में रखकर 'अहिंसा परमो धर्मः' के मूल सिद्धान्त को पल्लवित करने हेतु विभिन्न राज्य सरकारों के द्वारा ''**पर्यूषण पर्व**'' के दिनों में बूचड़खाने एवं मांस-मछली के विक्रय को बंद रखने हेतु समय-समय पर आदेश प्रसारित किये जाते रहे हैं।

पहले गुजरात राज्य में इस संबंध में प्रसारित आदेश को गुजरात हाईकोर्ट ने अनुचित मानकर उसे रद्द कर दिया था। किन्तु गुजरात हाईकोर्ट के द्वारा प्रदत्त निणर्य को सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली के द्वारा उचित नहीं माना गया और सुप्रीम कोर्ट ने ''**पर्यूषण पर्व**'' के 9 दिनों में बूचड़खाने तथा मांस-मछली की दुकानों को बन्द रखने जाने वाले अहमदाबाद म्युनिसिपल कार्पोरेशन के निर्णय को ही उचित ठहराया था।

सुप्रीम कोर्ट, बिहार, राजस्थान तथा छत्तीसगढ़ राज्य शासनों द्वारा प्रसारित आदेशों की सूचना एक ज्ञापन के साथ/माध्यम से आप तक प्रेषित की/कराई जा रही है। इन प्रमाणों के आधार पर आपसे अपेक्षा की जा रही है कि आप भी प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, नगरीय प्रशासन मंत्री, आपके जिले के प्रभारी मंत्री, सांसद, विधायक आदि जनप्रतिनिधियों को समय रहते उन्हें ज्ञापन देकर/भेजकर

इसी के साथ आपसे यह भी अपेक्षा की जा रही है कि देश/प्रदेश के अन्य नगरों में स्थित अपने परिचित, रिश्तेदार, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को भी इस विवरण को अधिकाधिक पहुँचाएँ ताकि इस वर्ष के ''**पर्यूषण पर्व**'' के दिनों तक शासन के द्वारा आदेश प्रसारित हो/ही जाएँ। इसके लिए समाज के सभी धर्मप्रेमी बन्धु सम्बंधित शासकीय विभागों को ज्ञापन तथा मिडिया में विज्ञापन देकर प्रचार-प्रसार करें।

संकलन : नितिन कुमार जैन, मो.: 09993285189

email : nitin_jains@yahoo.com

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 पारसचन्द के जन्म गाँव में मूलनायक प्रतिमा कौन सी है?

चन्द्रप्रभु भगवान [ ] पार्श्वनाथ भगवान [ ] महावीर भगवान [ ]

प्र. 2 पारसचन्द की प्रात: उठते ही किसमें लगन थी?

खेलन में [ ], जिनालय जाने में [ ] स्कूल जाने में [ ]

प्र.3 सुसंस्कारी दात्री माँ ने पारस को लोरी में क्या संदेश सुनाया?

घर में रहने का [ ], संसार में रहने का [ ], संसार से पार होने का [ ]

प्र. 4 पारसचन्द ने 6-7 वर्ष की उम्र में किस प्रमुख सिद्धक्षेत्र की वन्दना की थी?

गिरनार [ ], सम्मेदशिखर [ ], सोनागिर [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 सन् 1960 में श्रीमती मायाबाई से पारसचन्द का जन्म हुआ। [ ]

प्र.6 पारसचन्द ने सन् 1984 में ब्रह्मचर्य व्रत के साथ आजीवन नमक का भी त्याग किया था। [ ]

प्र.7 पारसचन्द ने 'दृष्टि बदली सृष्टि बदली' कविता गृह छोड़ने के पूर्व बनाई थी। [ ]

प्र.8 पारसचन्द ने कॉलेज की पढ़ाई जबलपुर में की थी [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 जैनागम संस्कार के चौथा अध्याय में .... का वर्णन है।

[तीर्थकरों के परिचय, व्यसन मुक्ति, देव दर्शन]

प्र.10 गुरुवर आर्जवसागर जी ने .... साल तक दक्षिण प्रदेशों की तीर्थ वंदना व वहाँ धर्म प्रभावना की थी।

[7, 13, 5, 10]

प्र.11 तीर्थोदय काव्य में करीब 200 पद्यों में .... विशेष वर्णन भी है।

[सम्यग्ज्ञान के विषय का, सम्यक् चारित्र के विषय का, सम्यग्दर्शन के विषय का]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 माता पिता ने अपने लाड़ले पुत्र का नाम 'पारसचन्द' क्यों रखा था?

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13 पारसचन्द का जन्म हुआ	पनागर में
प्र.14 पारसचन्द का ननिहाल था	फुटेराकलाँ में
प्र.15 पारसचन्द का बचपन बीता	जबेरा में
प्र.16 पारसचन्द ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया	पथरिया में

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 गुरुवर आर्जवसागर जी का 25 वाँ रजत जयंती वर्ष गिरनार सिद्धक्षेत्र पर मनाया गया [ ]

प्र.18 गुरुवर आर्जवसागर जी के जो दशलक्षण पर्व में प्रवचन हुए उसकी भावना शतक नामक कृति रची गयी। [ ]

प्र.19 गुरुवर आर्जवसागर जी ने अभी तक 13 राज्यों में विहार किया है। [ ]

प्र.20 गुरुवर आर्जवसागर जी वर्षोयोग में षोडशकारण व्रत व आगम कण्ठपाठ प्रतियोगिता करवाते हैं। [ ]

['पारस से बने आर्जवसागर' (जीवन गाथा) पर आधारित]

मुनिश्री के 25 वीं मुनि दीक्षा (रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में)

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**
प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य
तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचनविला, कृष्ण विहार, वी.के. कौल नगर, अजमेर (राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

ऋतु छावड़ा
द्वारा राजकुमार छावड़ा
4/120, मालवीय नगर, जयपुर

द्वितीय पुरस्कार
ममता बागड़िया
जैन स्टोन मार्ट, बाजार नं. 2
रामगंज मंडी (कोटा)

तृतीय पुरस्कार
अमरचंद जैन
प्राध्यापक (भौतिकी)
रामगंजमण्डी, कोटा

उत्तर पुस्तिका - मार्च 2012

1. 25 2. जैनागम संस्कार 3. तीर्थोदय काव्य
4. सोनागिरि 5. हाँ 6. ना
7. हाँ 8. हाँ 9. संसार की असारता का चिंतन
10. आचार्य विद्यासागर जी 11. पथरिया
12. सम्यक् ध्यान शतक में लिखीं हैं। वाःङ्गमनोगुप्ति आदि 25, दर्शनविशुद्धि आदि 16, अनित्यादि 12, शास्त्राभ्यासो आदि 7, सत्वेषुमैत्रीं आदि 4, सम्यग्दर्शनादि 3, संवेग व वैराग्य 2, और आत्म तत्त्व की एक।
13. 21 अध्याय में 14. 700 पद्यों में 15. 113 पद्यों में
16. प्रवचन संग्रह 17. सही 18. सही
19. सही 20. गलत

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी
● श्री ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा, रामगंजमंडी

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी
● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर
● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल
● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा
● श्रीमती हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री प्रकाशचंद जैन, उदयपुर ● श्रीमती निधी राहुल जैन, उदयपुर, अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज ● श्री अशोक कुमार ड्वारा (जैन), उदयपुर

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेबी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला ड्योड़िया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सोगानी
श्रीमती अरुणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन

श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन

श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री ताराचंद पाटनी
श्री शान्तिलाल पाटनी
श्री शान्तिलाल गोधा
श्री शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छाबड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांड्या
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)

श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती रंजना रमेशचंद शाह

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा
श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन

श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी

श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क
श्री मनीष सुभाषचंद जैन, कैलाश नगर

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री मनी खजांची

बेंग्लुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार दगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री रमेशचंद जी विनायका
श्री अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री शिखरचंद टोंग्या
श्री प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री केवलचंद लुहाड़िया
श्री अजीत कुमार सेठी
श्री महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री प्रेमचंद सबड़ा
श्री जयकुमार विनायका
श्री नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री सुमेरमल पहाड़िया
श्री रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन
श्री निर्मल कुमार जैन सेठी

सोनकच्छ, देवास

श्री पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

झालरपाटन (झालावाड़)

श्री विमल कुमार जैन (पाटोदी)

सिंगोली (नीमच)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला

बूंदी

श्री रूपचंद मोहनलाल जैन

भिण्डर (उदयपुर)

श्री ऋषभ कुमार जैन सीघवी
श्री विनोद कुमार गंगावत जैन
श्री आदिश्वरलाल कन्हैयालाल
श्री मनोहरलाल मदनलाल भुलावत
श्रीमती अनीता सुरेन्द्र जैन
श्रीमती रामचंदी राजमल कठालिया
श्री बाबरमल जैन
श्री पारसमल जैन (लिखमावत)
श्री सुरेश कुमार जैन (धर्मावत)
श्री प्रकाशचंद भादावत
श्री बसन्तीलाल वाणावत
श्री राजेश कुमार जैन (भादावत)
श्री महावीरलाल कठालिया
श्री अम्बालाल अनिल कुमार गोदड़ोत
श्री बगदीलाल गौतमलाल नागदा
श्री सतीशचंद्र जैन
श्री शान्तिलाल फान्दोत
श्री भंवरलाल जैन नागदा

उदयपुर

श्री महेन्द्र कुमार टाया
श्री कुन्थु कुमार जैन (गणपतोत)
श्री चन्द्र कुमार मित्तल
श्री राजेन्द्र कुमार जेन
श्रीमती सुशीला जैन पांड्या
श्री थावरचंद जैन
श्री रोशनलाल लालावत जैन
श्री रमेश कुमार वैद्य
श्री भगवतीलाल भादावत
श्रीमती मंजु कैलाशचंद्र जैन
श्रीमती निर्मला जीवन्धरलाल जैन
श्री महावीर जैन
श्रीमती रेखा शैलेन्द्र कुमार सांगानेरिया
श्री झमकलाल टाया
श्री सुरेशचंद जैन भादावत
श्री नवीन जैन
श्रीमति शशि धनपाल जैन

जूनागढ़(गिरनारजी)

सुश्री रीटाबेन विपुल कुमार टोपीवाला

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

- ☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।
- ☛ सत् साहित्य समीक्षा।
- ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।
- ☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।
- ☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।
- ☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।
- ☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

सिद्धक्षेत्र गिरनारजी में मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

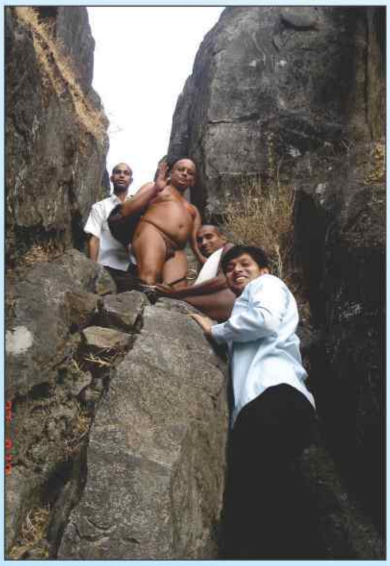

गिरनार की चौथी टोंक पर
मुनिश्री एवं भक्तगण

सहस्रार वन में
मुनिश्री एवं भक्तगण

चौथी टोंक पर मुनिश्री व भक्तगण

श्री गिरनार पर्वत पर मुनिश्री भक्तो को आशीर्वाद देते हुए

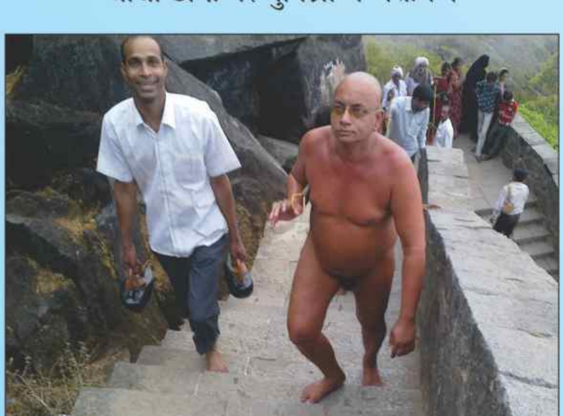

पांचवी टोंक पर जाते हुए मुनिश्री व भक्तगण

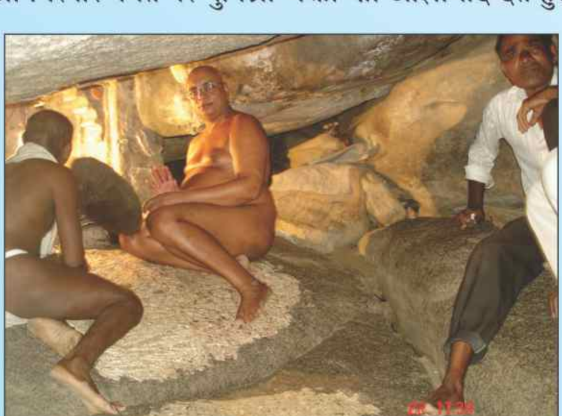

राजुल गुफा में मुनिश्री ससंघ

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

श्रुतपंचमी पर्व

मंच पर विराजमान आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

मंगलाचरण करती हुई बहिनें

श्रुतस्कन्ध विधान में भक्तगण

श्रीफल अर्पित करते हुए सुशील पहाड़िया जयपुर आदि

भोपाल के भक्तगण श्रीफल भेंट करते हुए

श्रुत पंचमी पर्व श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर अभिषेक करते हुए नरेश जैन सूरत

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,''एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)